वंदन - अभिनंदन

जब जीवन सरोवर सूख जाए,
हृदय-कमल की पंखुड़ियाँ झुलस जाए,
तब तू करुणा के बादलों के साथ उमड़-घुमड़कर आना
जब जीवन का सारा माधुर्य कटुता
के सूखे मरुस्थल में बदल जाए,
तब तू गीतों की सरस गंगा
बनकर आकाश में उतरना

धर्माध्यक्षीय जीवन के बारह बसंत
पूर्ण करने की मंगल बेला में

प्रार्थना एवं शुभकामनाओं के गुलदस्तों के संग

04.10.2026

समस्त पुरोहित, धर्मसंघी, लोकधर्मी एवं शुभचिंतक
- बरेली धर्मप्रांत

With Best Compliments From :-

DON BOSCO SR. SEC. SCHOOL
Don Bosco Nagar, Near Rai Bridge,
Pithoragarh-262501, Uttarakhand Phone No. : 9410560551

बरेली धर्मप्रांतीय पत्रिका

चेतना

वर्ष 32 | अक्टूबर 2026 | अंक 10

प्रभु! मुझे शांति का साधन बना।

निजी प्रसारण हेतु

FMA सलाहकार सि. सेलिन की भेंट

श्रद्धेय फा. विवेक मार्टिन का स्वागत

SJT Mother General Jesus Cavallos

पवित्र क्रूस पर्व – रुद्रपुर

बाइबिल महोत्सव – पोलीगंज डीनरी

बाइबिल महोत्सव – बाज़पुर डीनरी

संत मोनिका पर्व – मीरगंज

Youcat संगोष्ठी – काठगोदाम

बाइबिल सेमीनार – ज्योलीकोट

बालिका पर्व – ज्योलीकोट

बालिका दिवस – मोतीनगर

माता मरिया पर्व – बैलपड़ाव

माता मरिया पर्व – ज्योलीकोट

Youcat संगोष्ठी – काठगोदाम

महिला दिवस – रुद्रपुर

नूतन धर्मसंघ भवन उद्घाटन – बैलपड़ाव

पारिवारिक इकाई – रुद्रपुर

पारिवारिक इकाई – काठगोदाम

महागिरिजाघर महिला संघ की भेंट – करैली

महिला दिवस – बैलपड़ाव

चेतना

अनुक्रम

1.	सम्पादकीय	फा. ग्रेगरी फ्रैंक	2
2.	Bishop's Message	Most Rev. Ignatius D'Souza	3
3.	धर्माध्यक्ष का संदेश	अति मान्यवर डा. इग्नेशियस डिसूज़ा	4
4.	Bishop's Engagements	Fr. Charles P.	5
5.	St. Therese of Lisieux	Sr. Esme da Cunha, FDCC	6
6.	Our Guardian Angel	Sr. Rinki Nayak, FMA	8
7.	Gandhian Pauses...	Sr. Rekha Punia, UMI	9
8.	St. Teresa of Avila...	Sr. Helen, UFS	10
9.	A Missionary Within the Confines...	Sr. Smitha, FCC	11
10.	United in Mission...	Sr. Ibarisha Lyngdoh, VSDB	12
11.	Walking the Way of Peace...	Fr. Ajay Lobo	13
12.	The Power of Rosary in My Life	Sr. Lavina Dabre, MSI	15
13.	To Be Like Gandhi and Francis..!	Nisha John Masih	16
14.	बालिका सुरक्षा...	सि. नेन्सी रोड्रिगस DHM	17
15.	मेरी कलीसिया की मरम्मत करो	फा. फ्रांसिस पिन्टो	19
16.	जीवन में सच्चाई और सरलता	एलीज़बेथ पैट्रिक	21
17.	हिंसा हमारे भीतर होती है	शिवांगी शर्मा	22
18.	समाचार दर्शन		23
19.	बाइबिल प्रश्नोत्तरी	सुश्री श्वेता डिक्रूज़	27

Patron
Most Rev. Ignatius D'Souza

Editor
Fr. Gregory Frank

Editorial Board
Fr. Ivan Crasta
Fr. Vivian Fernandes
Fr. Arun Saldanha
Fr. Francis Pinto
Fr. Vijay Tellis
Mrs. Sumita James
Miss Shweta D Cruze

Whatsapp No. : 8533886703
Publishing Head Quarters:
Bishop's House
63, Cantt., Bareilly - 243 001
website: www.bareillydiocese.org

Design & Printing
Conrad Publishing House
P-1/B-15, Opp. Dominos,
D.D. Puram, Bareilly
Phone: 0581-2300802

संत पिता का मतलब : अक्टूबर 2026

मानसिक स्वास्थ्य सेवा कार्य के लिए:

आइए, हम प्रार्थना करें कि सारी कलीसिया में मानसिक स्वास्थ्य सेवाकार्य आरंभ हो और इससे मानसिक बीमारियों से ग्रसित व्यक्तियों के प्रति कलंक और भेदभाव को दूर करने में मदद मिले।

Holy Father's General Intention: October 2026

For mental health ministry:

Let us pray that the mental health ministry be established throughout the Church, helping to overcome the stigma and discrimination of persons with mental illnesses.

सम्पादक की कलम से

अहिंसा की शक्ति

महात्मा गांधी जी के पौत्र डा. अरुण गांधी ने पोर्टो रिको के एक विश्वविद्यालय में व्याख्यान देते समय अपने जीवन का एक अनुभव साझा किया।

"मैं सोलह वर्ष का था और हम मेरे दादा जी द्वारा स्थापित संस्था में रह रहे थे। यह स्थान दक्षिण अफ्रीका के डर्बन शहर के बाहरी इलाके में नगर से 18 मील दूर था। हम लोग दूर देहाती क्षेत्र में थे और हमारा कोई पड़ोसी नहीं था। मैं और मेरी दो बहनें अक्सर शहर जाने की ताक में रहते थे ताकि हम अपने दोस्तों से मिलें या कोई फिल्म देखें।

एक दिन मेरे पिताजी को कोई संगोष्ठी में भाग लेना था और उन्होंने मुझ से कहा कि मैं उन्हें शहर ले जाऊँ। मैं बहुत खुश था। मम्मी ने शहर से लाने के लिये कुछ वस्तुओं की सूची दे दी और पापा ने कहा कि गाड़ी की सर्विस करा देना। मैंने पिताजी को संगोष्ठी के स्थान पर पहुँचा दिया। पिताजी ने कहा कि वे शाम को पाँच बजे उसी जगह मिलेंगे।

मैंने गाड़ी सर्विस के लिये दे दी और बाकी सब काम निपटा दिये। अभी समय था। इसलिये मैंने सोचा कि एक फिल्म देखते हैं। फिल्म देखते, मैं समय भूल गया और जब देखा तो शाम के 5.30 बज रहे थे। मैं जल्दी से गैरेज की ओर दौड़ा और गाड़ी लेकर पापा के पास पहुँचा तो शाम के 6:30 बज रहे थे। पापा ने चिंता से पूछा, "तुम्हें इतनी देर क्यों हो गई?" मुझे साहस नहीं हुआ कि कह दूँ कि फिल्म देखने गया था। "गाड़ी तैयार नहीं थी। इसलिये देर हो गई।" मुझे यह नहीं मालूम था कि पापा ने पहले ही गैरेज में बात की थी। अब मैं पकड़ा गया था।

पापा मुझसे बोले, "बेटा, लगता है तुम्हारी देखभाल में मुझ से कोई बड़ी गलती हुई है। मैं तुम्हें इतना धैर्य भी नहीं दे सका कि तुम मुझे सच बताओ। इसलिये मैं वापस 18 मील (लगभग 29 कि.मी.) पैदल चलना चाहता हूँ और इस बात पर गौर करना चाहता हूँ।"

"वे सूट-बूट पहने उस अंधेरे में, ऊबड़-खाबड़ रास्ते में चलते रहे। रास्ते में रोशनी नहीं थी। मैं उन्हें छोड़ नहीं सकता था। साढ़े पाँच घंटे मैं उनके पीछे-पीछे, धीरे-धीरे गाड़ी चलाता रहा। मैं अपनी एक मूर्ख गलती के लिये पापा की यह प्राण पीड़ा देख रहा था। मैंने उसी दिन कसम खाई कि मैं भविष्य में कभी झूठ नहीं बोलूँगा।"

"मैं अक्सर इस घटना के बारे में सोचता हूँ कि यदि उस दिन मेरे पिता अन्य पिताओं की तरह मुझे मारते, गाली देते तो क्या मैं कुछ भी सीख लेता? मुझे नहीं लगता है। मैं मार खा लेता, गुस्सा करता और आगे भी झूठ बोलता रहता। परन्तु यह एक अहिंसा का काम इतना प्रभावशाली था कि मुझे लगता है कि जैसे यह घटना कल ही हुई है। यह अहिंसा की शक्ति है।"

अहिंसा का मार्ग अपनाने से समाज में एक ऐसा वातावरण उत्पन्न होता है जहाँ सभी लोग एक-दूसरे के प्रति सम्मान और करुणा का भाव रखते हैं। यह एकजुटता, सहिष्णुता और शांति की दिशा में पहला कदम है। अहिंसा को कमजोरी का प्रतीक नहीं माना जाना चाहिए। इसके विपरीत यह सबसे बड़ी शक्ति है क्योंकि यह व्यक्ति के आत्म-नियंत्रण, धैर्य और दृढ़ संकल्प को दर्शाता है। महात्मा गांधी जी ने कहा था, 'अहिंसा ताकतवर का हथियार है, कायर का नहीं'।

येसु ने कहा, "जो तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारता है, दूसरा भी उसके सामने कर दो।" (लूकस 6:29) यह हमारी दुर्बलता नहीं वरन् हमारी आंतरिक शक्ति है जो दर्द सहकर भी हिंसा से प्रतिरोध नहीं करती है।

आज के समय जब चारों ओर तनाव, हिंसा और संघर्ष की स्थिति बनी रहती है, अहिंसा का मार्ग हमें एक संतुलित और शांतिपूर्ण जीवन में मदद करता है। अहिंसा केवल एक नीति नहीं है, यह जीवन जीने की एक कला है। अहिंसा की शक्ति से ही हम स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।

ग्रेगरी फ्रैंक

Two Lives, One Inspiration

Across the centuries, some lives become more than history, they become **a message for humanity**. St. Francis of Assisi and Mahatma Gandhi lived in different ages, cultures and circumstances. Francis was a Christian saint seeking to follow Christ radically; Gandhi was a leader of India's freedom movement who made truth and non-violence the foundation of his struggle. Yet their lives converge in a remarkable witness to **simplicity, truth, peace, compassion and service**.

Both chose simplicity over luxury: Francis renounced wealth and privilege to become poor with the poor. Gandhi deliberately adopted a simple lifestyle and identified himself with India's poorest people. For both, simplicity was not deprivation but freedom, a freedom to serve, to share and to remain close to those who were often forgotten. In a world driven by consumerism, their lives ask us: ***Do we possess things, or have things begun to possess us?***

Both made truth central to life: Gandhi's conviction, ***"Truth is God,"*** shaped his struggle for justice. Francis sought to make the Gospel visible through his life of humility, poverty and love. Their witness reminds us that truth is not merely something we speak; **truth must be lived**, even when it demands courage and sacrifice.

Both believed in the power of peace: Gandhi demonstrated that non-violence could challenge injustice without hatred. Francis became a messenger of reconciliation, fraternity and peace. Their message is particularly relevant in a world wounded by war, polarization and intolerance: **we do not create peace by defeating one another, but by learning to see one another as brothers and sisters.**

Both placed the poor at the centre of their lives: Francis embraced those whom society rejected, discovering Christ in the poor and suffering. Gandhi sought solidarity with the most vulnerable and made their dignity central to his vision. They remind us that the poor are not merely objects of charity; they are **persons whose dignity is sacred** and whose lives can teach us compassion and humanity.

Their love also extended beyond humanity: Francis saw creation as a family of brothers and sisters. Gandhi advocated responsible and restrained living. Together they speak powerfully to our ecological crisis: **creation is not ours to exploit without limits; it is a gift entrusted to us for the good of all and for generations yet to come.**

Perhaps the most striking lesson is that **neither sought greatness for himself**. Francis wanted only to follow Christ. Gandhi sought to live truthfully and serve his people. Yet both became great because they were willing to become small. Their lives leave us with a simple but demanding challenge: **Live simply. Seek truth. Choose peace. Stand with the poor. Forgive generously. Care for creation. Serve rather than seek to be served.** The world today does not merely need people who speak about peace, justice and compassion. It needs people who **embody them**. Francis and Gandhi remind us that the transformation of the world begins with the transformation of the heart. When our hearts are changed by truth, humility, compassion and love, **our families, communities and societies can also change.**

Two lives, separated by centuries. Two different paths. Yet one enduring inspiration: **A life rooted in truth, simplicity, non-violence and love can become a powerful force for the transformation of humanity.**

† Ignatius D' Souza
Bishop of Bareilly

दो जीवन, एक प्रेरणा

धर्माध्यक्ष का संदेश

सदियों से, कुछ जीवन इतिहास से बढ़कर **मानवता के लिए एक संदेश** बन जाते हैं। असीसी के संत फ्रांसिस और महात्मा गांधी अलग-अलग युगों, संस्कृतियों और परिस्थितियों में रहे। फ्रांसिस एक ईसाई संत थे जो मसीह का पूर्ण निष्ठा से अनुसरण करना चाहते थे; वहीं गांधी भारत के स्वतंत्रता संग्राम के एक ऐसे नेता थे जिन्होंने सत्य और अहिंसा को अपने संघर्ष की नींव बनाया। इसके बावजूद, **सादगी, सत्य, शांति, करुणा और सेवा** के मामले में उनके जीवन एक अद्भुत मिसाल प्रस्तुत करते हैं।

दोनों ने विलासिता के बजाय सादगी को चुना: फ्रांसिस ने धन और विशेषाधिकारों का त्याग कर गरीबों के साथ गरीब बनना स्वीकार किया। गांधी ने जानबूझकर एक सरल जीवनशैली अपनाई और खुद को भारत के सबसे गरीब लोगों से जोड़ा। दोनों के लिए सादगी कोई अभाव नहीं बल्कि एक स्वतंत्रता थी। सेवा करने, बांटने और उन लोगों के करीब रहने की स्वतंत्रता जिन्हें अक्सर भुला दिया जाता है। उपभोक्तावाद से भरी इस दुनिया में, उनके जीवन हमसे यह सवाल पूछते हैं: ***क्या वस्तुएं हमारे अधिकार में हैं, या वस्तुओं ने हम पर अधिकार करना शुरू कर दिया है?***

दोनों ने जीवन में सत्य को केंद्रीय स्थान दिया: गांधी के इस विश्वास ने कि ***"सत्य ही ईश्वर है"***, उनके न्याय के संघर्ष को आकार दिया। फ्रांसिस ने अपने विनम्रता, गरीबी और प्रेम से भरे जीवन के माध्यम से सुसमाचार को साकार करने का प्रयास किया। उनका जीवन हमें याद दिलाता है कि सत्य केवल बोलने की चीज नहीं है; **सत्य को जीना पड़ता है**, भले ही इसके लिए साहस और बलिदान की आवश्यकता हो।

दोनों शांति की शक्ति में विश्वास रखते थे: गांधी ने यह सिद्ध कर दिखाया कि बिना किसी नफरत के अहिंसा के जरिए अन्याय को चुनौती दी जा सकती है। फ्रांसिस मेल-मिलाप, भाईचारे और शांति के दूत बने। युद्ध, ध्रुवीकरण और असहिष्णुता से घायल इस दुनिया में उनका संदेश विशेष रूप से प्रासंगिक है: **हम एक-दूसरे को हराकर शांति स्थापित नहीं करते, बल्कि एक-दूसरे को भाई-बहन के रूप में देखना सीखकर शांति लाते हैं।**

दोनों ने गरीबों को अपने जीवन के केंद्र में रखा: फ्रांसिस ने समाज द्वारा ठुकराए गए लोगों को गले लगाया और गरीबों व पीड़ितों में मसीह के दर्शन किए। गांधी ने सबसे कमजोर वर्ग के साथ एकजुटता का प्रयास किया और उनकी गरिमा को अपनी दृष्टि के केंद्र में रखा। वे हमें याद दिलाते हैं कि गरीब केवल दान पाने के पात्र नहीं हैं; **वे ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी गरिमा पवित्र है** और जिनका जीवन हमें करुणा व मानवता सिखा सकता है।

उनका प्रेम मानवता से परे भी फैला: फ्रांसिस ने पूरी सृष्टि को भाई-बहनों के एक परिवार के रूप में देखा। गांधी ने जिम्मेदारी और संयम से भरे जीवन की वकालत की। साथ मिलकर वे हमारे पारिस्थितिक संकट पर एक सशक्त संदेश देते हैं: सृष्टि का बिना किसी सीमा के शोषण करने का अधिकार हमारा नहीं है; **यह एक ऐसा उपहार है जो सभी के कल्याण और आने वाली पीढ़ियों के लिए हमें सौंपा गया है।**

शायद सबसे उल्लेखनीय सीख यह है कि **दोनों में से किसी ने अपने लिए महानता नहीं चाही।** फ्रांसिस केवल मसीह का अनुसरण करना चाहते थे। गांधी सच्चाई से जीना और अपने लोगों की सेवा करना चाहते थे। फिर भी दोनों इसलिए महान बने क्योंकि वे स्वयं को छोटा बनाने के लिए तैयार थे। उनके जीवन हमारे सामने एक सरल लेकिन चुनौतीपूर्ण संदेश छोड़ते हैं: **सादगी से जिएं। सत्य की खोज करें। शांति चुनें। गरीबों के साथ खड़े हों। उदारता से क्षमा करें। प्रकृति की देखभाल करें। सेवा पाने की इच्छा रखने के बजाय सेवा करें।** आज की दुनिया को केवल ऐसे लोगों की आवश्यकता नहीं है जो शांति, न्याय और करुणा की बात करते हों। इसे ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो **इन्हें अपने जीवन में उतारते हों।** फ्रांसिस और गांधी हमें याद दिलाते हैं कि दुनिया का

(क्रमशः पृ. 7)

CATHOLIC DIOCESE OF BAREILLY

Bishop's Engagements

October 2026

Date	Day	Time		Programme
1st	Thu		AM	Office
		04:00	PM	Accompanying the Young Minds: A New Horizon on Church's Mental Health Ministry - ONLINE
2nd	Fri		AM	Office
3rd	Sat	08:30	AM	Bareilly Diocesan Bible Festival, St. Peter's School, Kichha
		06:00	PM	The Transitus of St. Francis of Assisi: St. Alphonsus Cathedral, Bareilly
4th	**Sun**	**08:00**	**AM**	**Holy Eucharist: Feast of St. Francis of Assisi, St. Alphonsus Cathedral, Bareilly**
		05:00	**PM**	**Holy Eucharist: Feast of St. Francis of Assisi, Daha Farm**
5th – 10th	Mon - Sat		AM	Attends CCBI Joint Reflection Programme at Mussoorie
11th	**Sun**	**10:00**	**AM**	**Feast of St. Francis of Assisi, Jyoti Niketan Ashram, Kareilly**
		05:30	**PM**	**Feast of Our Lady of Holy Rosary, Amariya**
12th	Mon		AM	Leaves for Bangalore
13th- 16th	Tue - Fri		AM	Attends National Youth Convention (NYC) Programme, Christ University, Bangalore
17th	Sat		AM	Platinum Jubilee of Institute of the Maids of the Poor, Barabanki
		11:30	PM	Returns to Bareilly
18th	**Sun**	**11:00**	**AM**	**Holy Eucharist: Diocesan Youth Convention, Child Care Bishop Conrad School, Harunagla**
19th	Mon		AM	Office
		05:00	PM	**Silver Jubilee of Rev. Sr. Priya, SAP, St. Ann's Church, Rudrapur**
20th	Tue		AM	Leaves for Germany
21st–31st	Wed - Sat			Pastoral Assignments in Germany

Fr. Charles P. Secretary

St. Therese of Lisieux
(1873 - 1897)

Therese Martin was the youngest of nine children, four of whom died in early childhood. She was barely four and a half years old when her mother, Azelie Guerin died of Cancer. All five surviving daughters chose the Religious Life - four of them (Marie, Pauline, Therese and Celine) joined the Carmelite Monastery in Lisieux, while one of them, Leonie, joined the Visitation Sisters.

Therese felt an early call to the Cloister. Overcoming various obstacles, she even made a pilgrimage to Rome, and obtained a special permission from Pope Leo XIII, to join the Carmelite Monastery in Lisieux at the early age of 15. So, in 1888, she joined two of her older sisters in the same Carmelite Community in Lisieux.

Her father, Louis Martin, was 65 years old at that time. When he was 22 years old, he himself had attempted to enter a monastery. He died at the age of 71. Celine, yet another of her sisters, also joined the Order after Therese did.

Therese served in various household chores, and also as sacristan and assistant to the novice mistress.

All her life, Therese suffered from scruples and fears of having offended God.

She wrote that reciting the rosary was harder for her than any painful religious penance. She confessed that she could not easily keep her mind fixed on the mysteries of the rosary. She often felt that she said the prayers poorly, and worried about her lack of comforting feelings or focus during this devotion.

Despite her struggles, she persevered in praying it, out of love for the Blessed Virgin Mary.

After just nine years as a Carmelite Sister, at the young age of 24, Therese was affected by tuberculosis. Towards the end of her short life, she endured an intense and painful final agony, marked by extreme physical distress, suffocation, and exhaustion, due to the advanced progression of her illness.

She died on 30 September, 1897. On her deathbed, she stated that she would spend her heaven doing good on earth.

Her Autobiography: Two and a half years before her death, while Pauline (who was called Mother Agnes in Religion) was Prioress, asked Therese to write her life story. Therese began writing down her childhood memories. Then she wrote a detailed account of her spiritual journey. She described her spiritual path in her famous memoir, calling it a '*Story of my Soul*'. Few could have guessed the eventual outcome.

Unknown to many, Therese's autobiography went through many intentional revisions in the early days of its publication. Because of the personal nature of the intense trials of faith that Therese endured, the Sisters thought it best to filter several of the personal entries — greatly diminishing the human and spiritual element of her powerful autobiography.

She provides a deep, encouraging and meaningful message to any man or woman who wishes to make this world a better place, who wishes to give significance to his or her existence.

Yet this "*Story of my soul*," first published in 1898 in a highly edited version, quickly became a modern spiritual classic, read by millions, and translated into dozens of languages around the world.

Her *'Little Way'*: Therese is best known for her "*Little Way*", a path of spiritual simplicity and trust in God's love and mercy. Her spiritual path focused on achieving holiness, not through great deeds, but by doing ordinary,

everyday tasks, with extraordinary love and childlike trust in God. She found holiness in the smallest acts of love and kindness. Throughout her life, she focused on prayer, self-sacrifice and offering everything she did, as an expression of her love for God.

Her example of faith, simplicity, and trust in God continues to inspire and guide people seeking a deeper relationship with God and a life of love and service.

She said: "*Do not miss a single opportunity of making some small sacrifice - by a smiling look or a kindly word; always doing the smallest things in a right way, and doing it all for love*."

Small Acts: "*Holiness does not require big, heroic deeds; it is found in doing ordinary everyday tasks with extraordinary love*."

Spiritual Childhood: She compared her path to that of a little child who tries to climb stairs, falls short, and is lovingly picked up and carried by her father (God).

Accepting Imperfections: Instead of being discouraged by weakness or sin, she said that we must humbly accept our limitations and trust completely in God's mercy.

On showing love, she says: "*Love proves itself by deeds, so how am I to show my love? Great deeds are forbidden me. The only way I can prove my love is by scattering flowers—and these flowers are every little sacrifice, every glance and word, and the doing of the least things for love.*"

Spiritual surrender: "*Perfection seems simple to me; I see it is sufficient to recognize one's nothingness and to abandon oneself as a child into God's arms*." She believed holiness did not require great and heroic actions.

Everyday Love: She taught that people can reach heaven by doing ordinary, small daily tasks with great love.

Spiritual Childhood: Her approach relied on trusting God completely, just like a little child trusts a loving father.

Pope Pius XI canonized St Therese of Lisieux on May 17, 1925.

Pope John Paul II declared her a Doctor of the Church in 1997, making her the 33rd and the youngest person to receive this title.

The '*Little Flower*' has also been declared the Patroness of the Missions, even though she never went on one herself. She spent all her life in a cloistered convent, yet God fulfilled this desire of hers for intense travel spiritually. She was named the universal patroness of the foreign missions because of her deep dedication to praying for missionaries.

Her parents, Louis and Zelie Martin, were canonized as saints by Pope Francis in 2015, marking the first time a married couple was canonized together.

Her sister Leonie, who joined the Visitation Sisters, also died in an odour of sanctity and has been declared 'Servant of God'.

The Church celebrates the feast of St. Therese on 1 October. Our little saint continues to intercede for us. Through her prayers, and following her example, may we too reach the Heavenly Gates to join in the unending praise of all these holy souls who have preceded us to this final and eternal Abode!

Sr. Esme da Cunha Fdcc, Prayagraj

✦✦✦✦✦✦✦✦

(पृष्ठ 4 का शेष)

परिवर्तन दिल के परिवर्तन से शुरू होता है। जब हमारे दिल सत्य, नम्रता, करुणा और प्रेम से बदलते हैं, तो **हमारे परिवार, समाज और राष्ट्र भी बदल सकते हैं।**

सदियों के अंतर वाले दो जीवन। दो अलग रास्ते। फिर भी एक निरंतर प्रेरणा: **सत्य, सादगी, अहिंसा और प्रेम में रची-बसी जिंदगी मानवता के परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली शक्ति बन सकती है।**

† इग्नेशियस डिसूजा,
धर्माध्यक्ष

Our Guardian Angel

Guardian angel is believed in many religious traditions to be a spiritual being who protects, guides, and watches over a person throughout life. The concept is especially prominent in Christianity, where guardian angels are viewed as God's messengers who offer protection and guidance.

According to Christian tradition, guardian angels do not replace human free will. Instead, they are believed to encourage people toward goodness, offer comfort in times of difficulty, and protect them from spiritual and physical harm. A commonly cited biblical passage is Matthew 18:10, where Jesus speaks of "their angels" who are always in the presence of God, a verse many Christians interpret as supporting the idea of guardian angels.

Many people report feeling comforted by the belief that a guardian angel is with them, especially during moments of fear, uncertainty, or danger. While some view guardian angels as a matter of faith, others see them as a symbol of hope, protection, and divine care. There is no scientific evidence proving the existence of guardian angels, so belief in them remains a matter of personal or religious conviction.

We have all had an occasion when we narrowly missed being involved in an accident or mysteriously survived some danger. There are times when a friend we haven't seen in a long time comes to mind, someone we later find out is going through a difficult time. They are all experiences we can't seem to explain. Could our guardian be saving us from some danger or trying to make us aware of a person who needs our help and prayers?

God has appointed an angel to walk with us during each moment of our lives. He is our inseparable companion, accompanying us throughout our journey, watching over us, and guiding us along the way. He protects us from harm and helps us to grow in our relationship with God.

The primary role of guardian angels is to lead us to everlasting life with God. Since they always behold the Father's face in heaven, they reflect this divine light in our lives. Although they may at times protect us from physical harm, they are mainly concerned with protecting us from spiritual harm.

Our guardian angels act as God's messengers. They don't speak to us with words but through inspirations. They gently direct our hearts and minds to walk along the path that leads to heaven, but they always respect our free will. These angels act like instruments of the Holy Spirit, offering consolation, encouragement, protection, and guidance.

In conclusion, the idea of a guardian angel has inspired people for centuries. Whether understood as a literal spiritual protector or as a powerful symbol of guidance and hope, guardian angels continue to offer comfort and encouragement to millions around the world.

Sr. Rinki Nayak, FMA,
Bareilly

Gandhian Pauses: 'Where Ahimsa Begins Within'

Every Gandhi Jayanti, we speak of **peace, non-violence and the Mahatma**. We remember the man who taught the world that strength does not always shout, fight or retaliate. But perhaps this Gandhi Jayanti invites me to ask a more uncomfortable question: ***"How peaceful am I - inside?"***

Because violence does not always look like a raised fist. *Sometimes it looks like a sharp reply. A silent grudge. An unforgiving thought. Jealousy disguised as comparison. Irritation that spills over onto someone who did not deserve it.*

I remember hearing someone say, *"I am not an angry person; I am just tired."* How often do we call ourselves impatient when perhaps we are exhausted? How often do we snap at someone when what we really need is rest? How often does a little inner wound become a big outer reaction? Perhaps much of our modern violence is simply '*unprocessed stress wearing an angry face.'*

The violence within may not always begin with hatred. **Sometimes it begins with exhaustion.** This is where Gandhi offers us something wonderfully practical: '**The Pause'.**

A Gandhian pause before replying. A Gandhian pause before judging. A Gandhian pause before forwarding anger. A Gandhian pause before turning one disagreement into a war.

Gandhi practised simplicity, prayer, silence, reflection and disciplined living - not because they were 'fashionable wellness habits', but because he believed **inner discipline gives moral strength to outer action**. We too can create our own little practices of non-violence: *sleep before snapping, silence before reacting, breathing before answering, walking before exploding, prayer before judging and forgiveness before resentment becomes a permanent resident of the heart.*

And perhaps tonight, before sleeping, we can conduct our own little 'experiment with truth': *"Whom did I hurt today - with my words, my tone, my impatience or my silence? And what can I do differently tomorrow?"* **That, for sure, will be the real spirit of Gandhi Jayanti:** *Not merely garlanding Gandhi's photograph…Not merely quoting him…Not merely remembering how he changed history.* But asking whether a little of his courage, restraint and compassion can change the violence within.

The freedom Gandhi fought for was political - but the freedom he practised every day was deeply spiritual: **freedom from fear, hatred, uncontrolled desire and the impulse to retaliate.** And perhaps the greatest tribute we could pay him is to fight that battle quietly, patiently, every day: *'To win the war within, and the world outside becomes a little less violent.'* Maybe that is where *ahimsa* truly begins **- not with the world, but with me**. And this is where Gandhi becomes deeply relevant - not as a statue, but as a mirror.

Non-violence begins in the few seconds when we choose not to retaliate. It begins when we pause before replying. It begins when we ask, *"Am I hurt - or am I angry?"* It begins when we replace *"How dare you?"* with *"Help me understand."*

Let us win one small battle within every day - *the battle against impatience, prejudice, resentment, comparison and harshness. Because* ***a*** **peaceful world is not built only by peaceful nations…it is built by peaceful hearts.**

And perhaps the most beautiful Gandhi Jayanti prayer could simply be: *"Mahatma, teach me not only to resist the violence of the world, but also to recognize and gently disarm the violence within me."*

Sr. Rekha Punia, UMI, Greater Noida

St. Teresa of Avila

A Reformer of Heart, Soul, and Cloister

Introduction: Saint Teresa of Avila (1515 - 1582), a towering figure of Christian history is a Spanish mystic, prolific writer, and a tireless reformer. She left an indelible mark on the Catholic Church during the turbulent era of the Counter-Reformation. Her life bridges the gap between deep, contemplative mysticism on the one hand and a fierce, practical organizational reform on the other hand; it offers a blueprint for spiritual renewal that continues to resonate centuries later. We investigate this concerns from a historical, theological, practical and personal standpoint in view of enabling a reform of the heart, soul and spirit of oneself and of the humanity.

Historical Context: The 16th-Century Church: Teresa lived during a period of immense religious upheaval. The Protestant Reformation was sweeping across Northern Europe, while Spain was grappling with its own internal spiritual identity under the shadow of the Inquisition. More specifically, the state of **monasticism** was at stake: many 16th-century convents had strayed far from their original ascetic ideals. The Incarnation monastery at Avila, where Teresa first lived, housed over 130 nuns and operated more like a social club for the nobility than a house of prayer. Its parlours were crowded with visitors, and worldly status dictated daily life of the convent. In response to these aberrations as well as external pressures, the Church desperately needed a **Counter-Reformation /** internal renewal. While the Council of Trent addressed the Church's structural abuses, figures like Teresa and her spiritual son – St John of the Cross, provided the spiritual heartwood for this reform by reviving the primitive, austere roots of the Carmelite Order.

Theological Vision of Teresa of Avila: Teresa offered a theology that was not rooted in academic dogma but in lived experience. She brilliantly mapped the human soul's journey toward union with God. Three aspects require mention in this regard. (i) ***The Interior Castle*** **(book):** In this masterpiece, she envisions the soul as a diamond shaped like a castle that contains seven dwelling places. Progressing through these mansions represents deeper stages of prayer, self-knowledge, and surrender. (ii) **Prayer as Friendship:** Teresa famously defined prayer not as reciting formulas, but as 'an intimate sharing between friends; it means taking time frequently to be alone with Him who we know loves us'. (iii) **The Humanity of Christ:** Unlike some contemporary mystics who focused solely on abstract divinity, Teresa anchored her mysticism in a deep devotion to the humanity of Christ, seeing Him as the ultimate companion and doorway to the divine.

Practical Reform: The Discalced Carmelites: Teresa was no armchair mystic; she was a pragmatic visionary. Despite chronic illness and fierce opposition from civic and religious authorities, she founded 17 reformed convents across Spain. Two characteristic features determined these convents. (a) the **'Discalced' ideal:** her reform emphasized poverty, enclosure, simple clothing (hence *discalced* or barefoot), and a return to intense communal prayer. (b) **Fierce determination:** Facing lawsuits, detentions, and ecclesiastical backlash, Teresa relied on her trademark blend of 'divine trust and sharp wit'. She famously remarked to God during a difficult journey, 'If this is the way You treat your friends, no wonder you have so few!'.

Personal Reflection: What Teresa Teaches Us Today Reflecting on Teresa of Avila's life offers a profound challenge to the modern seeker. In an age dominated by noise, digital distraction, and a relentless pursuit of external validation, Teresa calls us inward. Two aspects to be mentioned here: (a) **Courage in the Face of Chaos:** If a 16th-century nun could navigate political suspicion, institutional resistance, and failing health to birth a massive spiritual movement, it reminds us that meaningful change begins with personal integrity and courage. (b) **The Integration of Life and Spirit:** Teresa teaches us that holiness does not require escaping the world into a realm of pure abstraction. She managed complex building projects, mediated community disputes, and wrote foundational literature, all of which while maintaining a deep contemplative prayer life. For her, peeling potatoes and writing theology were equally valid ways to love God.

Conclusion: Ultimately, Teresa of Avila invites us to stop running from our inner selves and to step inside the castle of our own souls, trusting that God is waiting there to transform us from the inside out. Self-transformation automatically guides transformation of the humanity.

Sr. Helen UFS, Nawabganj

✦✦✦✦✦✦✦✦

A Missionary Within the Confines of Four Walls

The word missionary often creates an image of a person travelling to distant lands, learning unfamiliar languages, preaching the Gospel, serving the poor, building schools or hospitals, and announcing Christ to people who have never heard His name. Yet the Church gives us another, deeper understanding of mission: a person can be a missionary without ever crossing the walls of a monastery, a convent, a home, a hospital room, or even a small bedroom.

The first missionary journey is not a journey from one country to another. It is the journey from self to God and from God to others. St. Thérèse of Lisieux understood this. She discovered that the heart of every apostolate is love. The missionary question is therefore not first: “Where can I go?” It is: “Whom can I love for Jesus today?”

We may say: “I cannot preach.” “I cannot travel.” “I cannot work in the missions.” “I cannot do great things.” But we can love. And those of us who love is already missionary. A mother preparing a meal with love, a religious sister patiently caring for an elderly sister, a person offering a hidden sacrifice, someone praying faithfully for a troubled family member, a sick person offering suffering for the Church—all these can become missionary acts when they are united to Christ.

The missionary living behind four walls therefore does not need to wait for a dramatic opportunity. The mission is already in front of him or her. The person sitting beside you may be your mission. The difficult sister may be your mission. The elderly parent may be your mission. The child who keeps testing your patience may be your mission. The person who hurt you may even become your mission—not because you approve of the hurt, but because you can choose to pray for that person's conversion and salvation. The ordinary becomes extraordinary when love enters it.

Perhaps the greatest missionary territory is not Africa, Asia, Europe, or America. It is the human heart. Before we can carry Christ to others, we must allow Him to conquer us. Before we can call others to

conversion, we must continually allow ourselves to be converted. Before we can become instruments of God's love, we must allow ourselves to be loved. This was the secret of Thérèse. Her missionary power did not come from human strength. It came from falling more deeply in love with Jesus.

St. Therese's intercession is like an engine hidden inside a vehicle. The engine is not visible, but it silently gives the power to move forward. In the same way, Thérèse's prayer and sacrifice supported the Church's missionary work even though she herself remained behind the cloister. Her monastery became a mission territory. Her cell became a mission station. Her suffering became an offering for souls. This completely changes our understanding of the “four walls.” Four walls do not necessarily mean limitation. They can become an altar. A convent can become an altar. A home can become an altar. A hospital bed can become an altar. A classroom can become an altar. An office can become an altar. Even a lonely room can become an altar when everything within it is offered to Christ for the salvation of souls.

Perhaps God has not called me to cross oceans. Perhaps He has called me to cross the distance between myself and another person. Perhaps He has not asked me to preach to crowds. Perhaps He has asked me to speak one word of hope to someone who is discouraged. Perhaps He has not asked me to establish a school or hospital. Perhaps He has asked me to make my community a little more loving. Perhaps He has not asked me to become famous. Perhaps He has asked me to become holy. Perhaps He has not asked me to change the world. Perhaps He has asked me to let Him change me and then allow that change to touch everyone around me. This is the missionary spirit of St. Thérèse.

Sr. Smitha FCC, Lucknow

✦✦✦✦✦✦✦

United in Mission

World Mission Sunday

“That they may all be one… so that the world may believe that you have sent me.” — John 17:21

World Mission Sunday is a special invitation for every Christian to renew and deepen our understanding of the mission entrusted to us by Jesus Christ. As we celebrate the 100th World Mission Day in 2026 with the theme “One in Christ, United in Mission,” we are reminded that, although we come from different backgrounds, cultures and walks of life, we are one family in Christ and are called to participate together in His mission. Jesus prayed, “That they may all be one… so that the world may believe that you have sent me” (John 17:21). Our unity is therefore not only about living peacefully with one another; it is also a powerful witness to the Gospel. When Christians overcome differences, forgive one another and work together, the world can see the love of Christ through us.

The mission of Jesus is also the mission of every Christian. Jesus came to reveal the Father's love, to bring peace, to heal the broken-hearted, to welcome the rejected and to give hope to those who suffer. Before His Ascension, He told His disciples, “You will be my witnesses” (Acts 1:8). He also commanded, “Go therefore and make disciples of all nations” (Matthew 28:19). These words are addressed to each one of us. Through Baptism, we are all called to be missionary disciples. We do not need to travel to distant places to become missionaries. Our mission begins where God has placed us—in

our families, communities, workplaces, schools, parishes and among the people we meet each day.

To be a missionary means to make Christ present through our words, attitudes and actions. Jesus Himself showed us the way of humble and selfless service when He washed the feet of His disciples and said, “You also ought to wash one another's feet” (John 13:14). True mission is not about power, position or recognition, but about love and service. We are called to be kind to one another and to see God's face in every person, especially in those who are poor, suffering, rejected or forgotten. Jesus teaches us to overcome anger with gentleness, hatred with love, pride with humility, negativity with positivity, division with unity, judgment with understanding, selfishness with generosity, and discouragement with hope.

In a world marked by division, conflict and discouragement, Christians are called to be builders of unity, bridges of reconciliation and bearers of hope. Our differences in culture, language, gifts and traditions should enrich us rather than divide us. What unites us is greater: one Lord, one faith and one God and Father of all (cf. Ephesians 4:4–6). Our homes can become places of peace, our schools places of formation, our parishes missionary communities and our workplaces places where Christ's love is experienced.

As we celebrate this 100th World Mission Day, let us ask ourselves: Am I bringing Christ's love to others? Do people experience peace, kindness, compassion and hope through my presence? Am I willing to serve with humility? Am I building unity or contributing to division? Let our hands become the hands of Christ, our hearts His compassionate heart, our words of encouragement, and our lives a living witness to the Gospel.

United in Christ, let us go forth in love, serve with humility, make disciples with courage, and become joyful witnesses of the Gospel. United in Christ. United in Mission. United in Hope.

Sr. Ibarisha Lyngdoh Lyngkhoi VSDB,
Isainagar

✦✦✦✦✦✦✦

Walking the Way of Peace

Francis of Assisi and Gandhi

“*Blessed are the peacemakers, for they shall be called children of God.*” (Mat 5:9) Peace is one of the most beautiful and most misunderstood words in human language. We speak of peace when wars end, when arguments cease, when a troubled heart becomes calm, or when a community is no longer disturbed by conflict. But definition of peace always remain inadequate in its very essence. Peace is not merely silence or the absence of conflict. A person who cannot express his pain is not necessarily peaceful, just as someone sitting in a silently within four walls may be carrying deep anxiety, loneliness or inner wounds. True peace has both an **INNER and OUTER dimension**: it is experienced within as harmony of heart and mind, and expressed outside through right relationships, justice, reconciliation, and love. **Therefore Peace is inner wholeness that becomes outward harmony.** True peace is a positive reality. It is the restoration of right relationships, the presence of justice, the healing of wounds and the possibility of living together without fear and domination.

Francis belonged to medieval times of European world propagated peace by his passionate encounter with Christ and the Gospel. Gandhi belonged to modern India and

was formed by Hindu spirituality while engaging deeply with Indo-Christic religious traditions. Their contexts, beliefs and historical missions were different but they are very much identical with one another in their ethos and spirituality. Both discovered that peace begins with the transformation of the self and eventually become a transformation of society. They rejected the idea of becoming great while remaining prisoners of greed, hatred, domination and excessive attachment. Francis walked the path of evangelical poverty, fraternity and reconciliation. Gandhi walked the path of truth, simplicity and *ahimsa* (nonviolence). Their lives suggest that peace is something we learn to BECOME.

Courage to Make Peace: Peace becomes dangerous when it is confused with silence in the presence of injustice. There are moments when refusing to speak is itself a form of violence. Francis and Gandhi's life provide a powerful parallel to this reality. Their deeper concern was the dignity and moral freedom of human beings. It was a great struggle for them to go against their own limitedness and stand out for truth. Therefore Francis and Gandhi offer an important lesson to the modern world. Peace requires courage, because it asks people to confront injustice while refusing revenge. This is beautifully expressed in the Christian tradition of reconciliation. Pope Francis, in *Fratelli Tutti*, insists that forgiveness does not mean abandoning justice or pretending that wrongdoing has not occurred.

Ecological Peace: The Francis and Gandhian dialogue becomes even more compelling when viewed through the ecological crisis of our own time. The planet is experiencing climate change, deforestation, pollution, biodiversity loss, water scarcity and the destructive effects of excessive consumption. These realities reveal that the crisis of humanity is not only political or economic. It is also spiritual. The way human beings relate to the Earth reveals something about the way they understand themselves. Francis of Assisi stands as one of the great Christian witnesses to a different relationship with creation. Gandhi provides a complementary insight through his emphasis on simplicity and restraint. Francis teaches humanity to recover kinship with creation. Gandhi teaches humanity to recover self-restraint. One speaks strongly of fraternity with the Earth; the other challenges the appetite that consumes it. Together they offer a profound ecological ethic. Therefore Ecological conversion becomes a form of peace-making as the beatitudes expressed in the Gospel.

Francis of Assisi and Mahatma Gandhi never met physically, but their lives form a remarkable dialogue across history. Francis discovered peace by crossing boundaries, embracing the poor and seeing creation as a family. Gandhi discovered peace through truth, self-discipline, simplicity and nonviolence. The peacemaker is therefore not simply a person who avoids conflict. The peacemaker is one who has learned how to transform conflict. Such a person is not silent when justice demands speech, nor aggressive when disagreement arises. The peacemaker seeks the difficult middle path where truth and love remain together. Perhaps this is why the Gospel does not simply say, “Blessed are the PEACEFUL.” It says, “Blessed are the PEACEMAKERS.” The peaceful person may simply enjoy peace. The peacemaker creates it. Therefore lets become the peace makers.

Fr. Ajay Lobo,
Bangalore

The Power of Rosary in My Life

For me, the Rosary is not just a prayer. It is something very personal. It has been my companion through fear, loneliness, journeys, tears and moments when I simply did not know what to do. I often call it my weapon against evil, but more than that, it is the hand I hold when I need courage.

I have travelled many times, often alone and at odd hours. Naturally, there are moments when fear comes- What if something happens? What if I am not safe? But whenever I hold the Rosary in my hand and begin to pray, I feel a quiet strength within me. The situation may not change, but I change. I feel that I am not alone. My dearest Mother is with me.

One experience especially remains alive in my heart. During my second year of formation, I came home for the holidays and found my mother unwell. Her hemoglobin was very low, and the doctor advised blood transfusion. There were also concerns expressed by some people about possible complications. My mother was taken to another hospital, while I remained at home, feeling completely helpless. I could do nothing except pray. I stretched out my hands with the Rosary and prayed, "Mother Mary, please take care of my mother. She is in your hands now." I prayed with tears, placing my fear and helplessness before her. My mother recovered without the blood transfusion. I know that God works through doctors and medicines, and I am grateful for all the care she received. But in my heart, I experienced Mary's loving presence so deeply that even today I believe the Rosary became my prayer of surrender and hope.

Another memory goes back to 2004, when our family and relatives were travelling to Bangalore for my elder sister's religious profession. We prayed the rosary together. My cousin's little boy, only four years old, was with us. We were all in the same compartment, sitting in different places, and he was moving around freely. Suddenly, his mother realized that he was missing.

Panic spread through the compartment. Everyone began searching and calling his name. Yet, deep in our hearts, we were also praying and asking Mother Mary to protect him. Finally, we discovered that the little boy had walked five compartments ahead. He was crying, and a passenger had found him and was trying to help him. By then we reached to him.

Even today, when we remember that journey, we say, "Mother Mary was with us."

I have many such memories. Some big, some small, but together they have taught me the same lesson: when I cannot hold everything together, I can hold my Rosary.

There is something beautiful about each bead. For me, every bead carries a prayer, a person, a worry, a thanksgiving, a tear or a hope. Sometimes I pray with faith; sometimes I pray tired and distracted; sometimes I have no words at all. But I keep praying. I cannot remember going to bed without praying the Rosary.

The Rosary has taught me that faith does not mean that we never feel afraid. It means that we do not face our fears alone. It has taught me to surrender what I cannot control and to trust the Mother who always leads me to her Son, Jesus.

I have held the Rosary in my hands through many moments of my life. But looking back, I feel that, in so many moments, the Rosary was holding me.

That is the power of the Rosary in my life.

One bead. One prayer. One Hail Mary.

And the quiet assurance- "I am not alone. My Mother is with me.

Sr. Lavina Dabre MSI,
Motinagar, Haldwani

To Be Like Gandhi and Francis..!

"Truth is not simply something we speak. Truth is something we must live." - Christian call to truthfulness

In today's world, honesty and truthfulness are therefore not small virtues; they are the foundation of a meaningful life. As Christians, we are called to live in the light. Jesus said, *"I am the way, the truth, and the life"* (Jn 14:6). Our words, actions, thoughts, and character should reflect sincerity.

The Beauty of a Simple and True Life: St. Francis lived with humility, simplicity, love, and devotion to God. He understood that money, popularity, possessions, or power cannot guarantee peace or genuine relationships. He chose a simple and sincere life and wanted his actions to reflect his faith rather than merely impress people.

Faith Must Be Genuine: Faith should not be a mask worn only in church or on special occasions. True Christianity is revealed in ordinary moments: how we speak to family, how we treat people who cannot benefit us, whether we cheat when nobody is watching, and whether our words remain honest when lying would be easier. Jesus warned against hypocrisy and taught people to have a sincere heart before God. We may impress people with our appearance or achievements, but God sees the heart. We do not need to pretend to be perfect; we can admit our weaknesses, ask for forgiveness, and allow God to transform us.

Honesty Begins in Small Things: Dishonesty often begins with small choices: cheating in an examination, copying another person's work, lying to avoid trouble, taking what does not belong to us, or spreading a false story. Character is built through these daily decisions. Every time we refuse to cheat, admit a mistake, or speak the truth with kindness, we strengthen our integrity. *Honesty is like a muscle: the more we practice it, the stronger it becomes.* Being truthful does not mean being cruel. Saying *"I am just being honest"* is not an excuse to hurt others. Truth without love can become harshness, while love without truth can become dishonesty. Christians are called to speak the truth in love. We should be honest because we belong to God, not merely because we fear punishment or care about our reputation.

A Challenge for Our Generation: Our generation needs people who can be trusted: students who value learning more than cheating, leaders who serve rather than deceive, professionals who refuse corruption, friends who are loyal, and families where people can speak honestly without fear. Gandhi reminds us of the courage required to stand for truth. St. Francis reminds us of the *humility and simplicity* required to live sincerely. Together, their examples show that a meaningful life is built on truth, not pretending.

Every day we choose: truth or lies, honesty or cheating, responsibility or excuses, conscience or the crowd. These choices slowly shape who we become. Let us have the courage to tell the truth, the humility to admit mistakes, and the simplicity to live sincerely before God and others. Let our words be trustworthy, our actions genuine, and our faith visible in the way we live.

"Let us not merely admire truth. Let us practice it. Let us not merely speak about honesty. Let us live it." A truthful person earns trust. An honest person lives with a clean conscience. A sincere person builds meaningful relationships. *When we choose truth, even when nobody is watching, we build character.*

Nisha John Masih,
Bareilly

बालिका सुरक्षा
एक चिंतन

हम 21वीं सदी में जी रहे हैं- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), तीव्र तकनीकी प्रगति और असीम संभावनाओं का युग। तकनीक ने हमारे जीवन को पूरी तरह बदल दिया है। हमने नए अवसर पैदा किए हैं, अपने ग्रह की सीमाओं से परे पहुँच चुके हैं और वह हासिल किया है जो कभी असंभव लगता था।

साल 2018 में, अवनी चतुर्वेदी ने दो अन्य भारतीय महिला फाइटर पायलटों के साथ फाइटर जेट उड़ाकर पूरे देश को गौरवान्वित किया था। यह इस बात का एक शक्तिशाली उदाहरण था कि जब लड़कियों और महिलाओं को अवसर दिए जाते हैं, तो वे असाधारण ऊँचाइयों को छूने में सक्षम होती हैं और फिर भी, इन तमाम उपलब्धियों के बीच, एक परेशान करने वाला सवाल बना हुआ है। बालिका की सुरक्षा आज भी चिंता का विषय क्यों है? लड़कियों के खिलाफ हिंसा क्यों बढ़ती जा रही है?

हम गर्व से "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" और "लड़का-लड़की एक समान" जैसे नारे लगाते हैं। लेकिन क्या ये नारे वाकई हमारी सोच, हमारे परिवारों, संस्थानों और समाज में दिखाई देते हैं?

पितृसत्तात्मक सोच: एक प्रमुख कारण कई समाजों में मौजूद गहरी पितृसत्तात्मक मानसिकता है। बेटे को अक्सर प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि उससे परिवार के नाम को आगे बढ़ाने, संपत्ति का वारिस बनने और भविष्य में परिवार का सहारा बनने की उम्मीद की जाती है। दूसरी ओर, बेटी को आज भी कई बार बोझ या किसी अन्य परिवार की अमानत के रूप में देखा जाता है।

ऐसी सोच लड़की के जन्म से पहले ही शुरू हो सकती है और लिंग-चयनित प्रथाओं तथा बालिका के प्रति भेदभाव को बढ़ावा देती है।

आर्थिक दबाव: दहेज की गैर-कानूनी प्रथा परिवारों पर अत्यधिक वित्तीय और सामाजिक दबाव डालती रहती है। कुछ मामलों में, विवाह से जुड़े संभावित खर्चों के कारण लड़कियों को आर्थिक देनदारी माना जाता है।

गरीबी इस जोखिम को और बढ़ा सकती है। कुछ परिवार लड़कियों को स्कूल से निकालने और उन्हें बाल श्रम, मानव तस्करी या बाल विवाह में धकेलने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रथाएँ: बाल विवाह विशेष रूप से कुछ ग्रामीण और वंचित समुदायों में एक गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। लड़कियों का विवाह शारीरिक, मानसिक या आर्थिक रूप से तैयार होने से पहले ही कर दिया जाता है।

कम उम्र में विवाह से शिक्षा में बाधा आती है, अवसर सीमित हो जाते हैं और लड़कियाँ घरेलू व यौन हिंसा का शिकार हो सकती हैं।

संस्थागत कमियाँ और जागरूकता का अभाव: भारत में बच्चों और महिलाओं को हिंसा से बचाने के लिए कई कानून मौजूद हैं। लेकिन केवल कानून तब तक बदलाव नहीं ला सकते जब तक कि उन्हें प्रभावी ढंग से लागू न किया जाए।

कमजोर क्रियान्वयन, न्याय में देरी, जागरूकता की कमी और सामाजिक कलंक का डर पीड़ितों को असुरक्षित और अपराधियों को बेखौफ छोड़ देता है।

कई लड़कियों और परिवारों को अपने कानूनी अधिकारों या मदद पाने के स्थानों के बारे में जानकारी नहीं होती। पारिवारिक दबाव, लोक-लाज का डर और संस्थाओं पर भरोसे की कमी पीड़ितों को शिकायत दर्ज कराने से रोकती है।

जब खामोशी पीड़ित के बजाय अपराधी को संरक्षण देने लगे, तो समाज को खुद से पूछना होगा: हम किसकी तरफ हैं?

हमें एक ऐसा माहौल बनाना होगा जहाँ हिंसा का शिकार हुई लड़की को दोषी, लज्जित या चुप न कराया जाए, बल्कि उसकी बात सुनी जाए, उस पर विश्वास किया

जाए, उसे सुरक्षा और सहारा दिया जाए।

आगे का रास्ताः बदलाव की शुरुआत हमसे होती है– लैंगिक समानता के बारे में जागरूकता पैदा करना बदलाव की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है। लेकिन यह जागरूकता भाषणों, नारों और विशेष अवसरों तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए।

लैंगिक समानता को जीवन जीने का तरीका बनाना होगा। बदलाव की शुरुआत हमारी सोच और रवैये से होती है। इसकी शुरुआत तब होती है जब एक परिवार अपनी बेटी और बेटे को एक समान मूल्य और महत्व देता है। इसकी शुरुआत तब होती है जब माता-पिता लड़की के भविष्य का फैसला खुद करने के बजाय उसके सपनों को सुनते हैं। इसकी शुरुआत तब होती है जब स्कूल सुरक्षित और लैंगिक रूप से संवेदनशील स्थान बनते हैं। इसकी शुरुआत तब होती है जब समाज बाल विवाह, तस्करी, शोषण और भेदभाव को सहन करने से मना कर देता है।

इसकी शुरुआत तब होती है जब लड़कों को सिखाया जाता है कि लड़कियों का सम्मान करना कोई अहसान नहीं बल्कि एक जिम्मेदारी है और इसकी शुरुआत तब होती है जब लड़कियों को यह सिखाया जाता है कि उनकी आवाज मायने रखती है।

आइए हम अपने परिवारों, स्कूलों और समुदायों को लैंगिक रूप से अनुकूल बनाएँ, जहाँ हर बच्चे चाहे लड़की हो या लड़के के साथ सम्मान, गरिमा, प्यार और आदर के साथ व्यवहार किया जाए। जैसा कि संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव बान की-मून ने कहा था: "लैंगिक समानता केवल अपने आप में एक लक्ष्य नहीं है। यह गरीबी को कम करने, सतत विकास को बढ़ावा देने और सुशासन के निर्माण की चुनौतियों को पूरा करने की एक पूर्व शर्त है।"

अब सवाल यह नहीं है कि क्या लड़कियाँ महान उपलब्धियाँ हासिल करने में सक्षम हैं या नहीं। इसका जवाब हम पहले से ही जानते हैं। असली सवाल यह है- क्या हम एक ऐसा समाज बनाने के लिए तैयार हैं जहाँ हर लड़की सपने देखने के लिए सुरक्षित हो और उन सपनों को पूरा करने के लिए स्वतंत्र हो ?

आइए, हम केवल "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" न कहें। आइए, हम एक ऐसा समाज बनाएँ जहाँ हर लड़की कह सके- "मैं सुरक्षित हूँ। मेरा सम्मान है। मैं समान हूँ। मेरी एक आवाज है। मेरा एक भविष्य है।" और आइए, हम नेल्सन मंडेला के इन शक्तिशाली शब्दों को याद रखें। "स्वतंत्रता तब तक प्राप्त नहीं की जा सकती जब तक कि महिलाओं को सभी प्रकार के उत्पीड़न से मुक्त न कर दिया जाए।"

समानता का अर्थ लड़कियों को लड़कों से अधिक शक्तिशाली बनाना, या लड़कों को लड़कियों से अधिक शक्तिशाली बनाना नहीं है। इसका अर्थ एक ऐसी दुनिया का निर्माण करना है जहाँ हर इंसान को समान गरिमा, समान अधिकार और जीने, सपने देखने तथा आगे बढ़ने का समान अवसर मिले। "आज की लैंगिक समानता ही कल के एक न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण समाज की नींव है।"

सि. नेन्सी रोड्रिगस DHM,
अमरिया

✦✦✦✦✦✦✦

अहिंसा का पुजारी

वह अहिंसा के विचारों से
स्वाधीनता की धुन सुना गया
खादी बुनते-बुनते चरखे वाला
आजादी बुना गया
अहिंसा का पुजारी था वो
उन्हीं की हत्या पर जमाना, "हिंसा" सुझा गया
घायल शत्रु को भी पानी पिलाकर
इंसानियत से "इंसान" बनना, हमको सिखा गया
त्याग, तपस्या, सेवा ही "जीवन का मर्म" है,
शांति, दया, सद्भाव का वो हमें "धर्म" बता गया
तभी "महात्मा" कहलाता था
एक ही था वो, जो सत्य का 'अर्थ' बता गया।

सोनाली श्रीवास्तव,
मदर तेरेसा विद्यालय, करेली

मेरी कलीसिया की मरम्मत करो

असीसी के संत फ्रांसिस किसी दिन संत डामियानो के गिरिजाघर में प्रार्थना कर रहे थे। उस वक्त उन्हें प्रभु येसु की आवाज यह कहते हुए सुनाई पड़ी। ''फ्रांसिस, जाओ और मेरे घर की मरम्मत करो, जो जैसा कि तुम देख रहे हो, लगभग पूरी तरह से गिरने को है।'' असीसी के संत फ्रांसिस ने इस मिशन को बहुत गंभीरता से लिया। साथ ही साथ कठिन परिश्रम करते हुए अपने इस नये मिशन को आगे बढ़ाया। आज के समय में प्रभु येसु हम सबों को भी यही मिशन दे रहे हैं। सवाल यह है कि क्या आज हमारे चर्च को किस प्रकार मरम्मत की जरूरत है? वर्तमान समय में चर्च की दशा तथा दिशा देखकर 10 सुझाव प्रस्तुत लेख के द्वारा पेश किये गये हैं। आइये हम हमारे मिशन को समझें और उसके निर्माण का उचित कार्य करें।

पहली मरम्मत - पत्थरों की नहीं, दिलों की: आज हमारे चर्च की दीवारें मजबूत हो सकती हैं, लेकिन हमारे दिल मजबूत हैं? हम चर्च की टूटी हुई दीवार देख सकते हैं। पर क्या हम अपने भीतर की टूटी हुई दीवार देख सकते हैं? जैसे-ईर्ष्या की दीवार, क्रोध की दीवार, क्षमा न करने की दीवार, अहंकार की दीवार, जाति, भाषा और समूह की दीवार, यह मेरा है, वह तेरा है की दीवार, जैसे अनेक प्रकार की दीवारें हमारे बीच में हैं जिसकी मरम्मत करना बहुत ही जरूरी है। 1 कुरि 3 : 16 में संत पौलुस पूछते हैं - **''क्या तुम नहीं जानते कि तुम ईश्वर का मंदिर हो और ईश्वर की आत्मा तुममें निवास करती है।''** आज हम सब हमारी चर्च की दीवार सफेद कर सकते हैं, रंगीन कर सकते हैं, सुन्दर बना सकते हैं। लेकिन क्या हम हमारे दिल की दीवार सुन्दर बना सकते हैं?

दूसरी मरम्मत प्रेम की: प्रेम का महान रहस्य मिस्सा बलिदान चढ़ाने के लिए आये हुए लोगों में अगर प्रेम नहीं हैं, भाईचारा नहीं है, क्षमा की भावना लुप्त हो गयी है, तो निश्चित रूप से मरम्मत की आवश्यकता है। चर्च अपनापन का अहसास करने की जगह है। जहाँ यह अपनापन नहीं है वहाँ मरम्मत करनी है। प्रभु येसु कहते हैं - जैसे मैंने तुम लोगों से प्रेम किया है, वैसे ही तुम भी एक-दूसरे से प्रेम करो।'' (योहन 13 : 34)

तीसरी मरम्मत - यूखरिस्त से जीवन तक: हमारे गिरजाघरों में प्रतिदिन मिस्सा बलिदान चढ़ाया जाता है। पवित्र परम प्रसाद में प्रभु येसु की उपस्थिति हर समय मौजूद रहती है। उस प्रभु को हम ग्रहण करते हैं। पवित्र वचन कहता है - ज्योति जिसे आलोकित करती है, वह स्वयं ज्योति बन जाता है। यहाँ पर सवाल यह है कि क्या मैं इस यूखरिस्त से अपने जीवन को बदल रहा हूँ? मिस्सा बलिदान के अंतिम भाग में पुरोहित कहता है - जाओ और ख्रीस्त के संदेश को फैलाओ। मिस्सा के बाद जब मैं बाहर जाता हूँ तो क्या मैं अपने भाई-बहनों के लिए अपना समय देता हूँ? उनकी सेवा करता हूँ? दु:खियों को सान्त्वना देता हूँ? जीवन देने वाले कार्य करता हूँ? क्या मेरा जीवन यह दर्शाता है कि प्रभु येसु मुझमें निवास करता है? प्रभु येसु ने कहा - ''जो मेरा माँस खाता और मेरा रक्त पीता है वह मुझमें निवास करता है, और मैं उसमें ।''(योहन 6 : 56) अगर पवित्र यूखरिस्त में ग्रहण किया हुआ येसु हमारे व्यवहार में दिखाई न दे तो हमें मरम्मत की जरूरत है।

चौथी मरम्मत - परिवार की: परिवार एक छोटी से चर्च है। आज बहुत सारे परिवार टूटे हुये हैं। एक ही घर में लोग रहते हैं, लेकिन दिल की दूरी है। पति-पत्नी साथ रहते हैं लेकिन बातचीत नहीं। माता-पिता और बच्चे साथ हैं, पर समय नहीं है। बच्चें के हाथ में मोबाइल हैं, लेकिन बाइबिल नहीं है। घर में टी.वी. की आवाज है, लेकिन प्रार्थना की आवाज नहीं है। ऐसे परिवारों के लिए प्रभु येसु कहते हैं - जाओ, पहले अपने घर की मरम्मत करो।

पाँचवी मरम्मत - युवा व बच्चों का (जीवन निर्माण): असीसी के संत फ्रांसिस स्वयं एक युवा थे जब प्रभु ने उसे अपनी सेवा के लिए बुलाया। युवा व बच्चे आज प्रभु की आवाज की तुलना में दुनिया की आवाज ज्यादा सुनते हैं और

उसी रास्ते में अग्रसर होते हैं। अगर बच्चों को और युवाओं को कलीसिया के प्रति उनका कर्तव्य व जिम्मेदारी नहीं सिखाई तो उन्हें इस ओर आकर्षित करना जरूरी है।

छठी मरम्मत - सृष्टि की: संत फ्रांसिस के लिए हर जीव-जन्तु अपना भाई-बहन। ईश्वर की समस्त संरचना के प्रति उनका प्रेम बहुत गहरा था। समस्त सृष्टि की वह हिफाजत करता था। आज इस सुन्दर धरती को मनुष्य ने अपने स्वार्थ की वजह से खराब किया है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम पानी बचायें, पेड़ लगायें, गरीबों की सहायता करें, प्लास्टिक कम करें, पशु-पक्षियों की रक्षा करें और इस पृथ्वी के प्रति अपनी जिम्मदारी समझें और उसे सही तरीके से निभायें। ''ईश्वर ने मनुष्य को अदन की वाटिका में रखा कि वह उसकी खेती करे और उसकी रक्षा करे।'' (उत्पत्ति 2 : 15)

सातवीं मरम्मत - टूटे हुए संबंधों की: आज सुविधाओं की कोई कमी नहीं है लेकिन उसके अनुसार सुख नहीं है। क्योंकि रिश्तों में दरारें हैं, विभाजन है। लोग एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए नहीं हैं। घर-परिवार में रिश्ते टूटे हुए हैं। कहीं परिवारों की बोलचाल बंद है। समाज और पल्लियों में अलग-अलग समूह के बीच में वाद-विवाद चल रहा है। पुरानी नाराजगी वर्षों से चल रही है। बदले की भावना समाप्त नहीं हुई है। इस असीसी के संत फ्रांसिस कहते हैं कि दीवार मत बनो - बल्कि पुल बनो। ''जहाँ तक संभव हो सके, सब लोगों के साथ शांति बनाये रखो।'' (रोमियों 12 : 18)

आठवीं मरम्मत - गरीबों के प्रति हमारी दृष्टि: असीसी के संत फ्रांसिस ने गरीबों में प्रभु येसु को पहचाना। प्रभु का वचन कहता है ''मैं भूखा था और तुमने मुझे खिलाया और तुमने मुझे पिलाया, परदेशी व नंगा था, तुमने मुझे पहनाया और ख्याल रखा।'' (मत्ती 25 : 35-36) आज हमारे घर व चर्च का भवन बहुत सुन्दर हो गया है। जिनका जीवन सुन्दर नहीं है अर्थात् गरीबी में परेशानियों से लाचार हो गये हैं तो हमें उनके प्रति अपना दिल खोलना जरूरी है।

नौवीं मरम्मत - प्रार्थना की: आज हमें बहुत सारी गतिविधियाँ चाहिए। नये-नये कार्य-कलाप हम सब कर रहे हैं। इन तमाम योजनाओं की सफलता के लिए क्या हमारी प्रार्थना मजबूत हो गयी है? हम अपने बल पर कुछ नहीं कर सकते हमें ईश्वर के आशिष और कृपा की आवश्यकता है जो हमें प्रार्थना से मिलेगी।

सबसे बड़ी मरम्मत - स्वयं की: असीसी का संत फ्रांसिस स्वयं सुसमाचार बना। उसने सारे भले कार्य व सेवा अपना जीवन परिवर्तित करते हुए किया। आज हम सभी चाहते हैं हमारे देश में परिवर्तन हो, समाज में नयापन आये, हमारे लोगों में नवीनीकरण हो। असीसी के संत फ्रांसिस कहते हैं कि हम अपने स्वयं के जीवन से शुरू करें। हम बदलेंगे तो घर-परिवार बदल जायेगा। समाज बदल जायेगा और हर दिशाओं में नवीनीकरण होगा। चर्च की सबसे बड़ी दरार दीवार में नहीं, हमारे दिलों में हो सकती है। गिरजाघर को पवित्र बनाने के लिए सर्वप्रथम हम स्वयं को पवित्र बनायें।

फा. फ्रांसिस पिन्टो, दाह फार्म

✦✦✦✦✦✦✦

अहिंसा का दीप जलाएँ, मन में प्रेम जगाएँ,
नफरत की हर दीवार गिराएँ, मिलकर गीत सुनाएँ।
सत्य और शांति की राह पर, हम आगे बढ़ते जाएँ,
दुख में जो आँसू बहते हैं, उन्हें हँसी में बदलाएँ।
न क्रोध रखें, न बैर रखें, सबको गले लगाएँ,
छोटे-बड़े का भेद भुलाकर, मानवता अपनाएँ।
प्रेम बने हमारी शक्ति, करुणा बने पहचान,
अहिंसा से सुंदर हो जाए, अपना प्यारा हिंदुस्तान।

जीवन में सच्चाई और सरलता

आज का मनुष्य पहले से अधिक सुविधाओं से घिरा हुआ है, लेकिन भीतर की शांति कहीं खोती जा रही है। हम सफलता को धन, पद, प्रतिष्ठा और भौतिक सुख-सुविधाओं से मापने लगे हैं। ऐसे समय में दो महान व्यक्तित्व हमें जीवन का एक अलग रास्ता दिखाते हैं महात्मा गांधी और संत फ्रांसिस ऑफ असीसी। दोनों ने अलग-अलग समय और परिस्थितियों में जीवन जिया, लेकिन उनके जीवन में सत्य, सादगी, सेवा और त्याग की गहरी समानता दिखाई देती है।

गांधीजी का प्रसिद्ध कथन था- "सत्य ही ईश्वर है।" यह विचार बताता है कि सत्य उनके लिए किसी एक परिस्थिति या अवसर का साधन नहीं, बल्कि जीवन का मूल आधार था। बाइबिल में भी सत्य को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। येसु मसीह कहते हैं "सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा" (योहन 8:32)। सत्य मनुष्य को केवल बाहरी बंधनों से नहीं, बल्कि भय, छल और अपराध-बोध जैसे आंतरिक बोझ से भी मुक्त करता है।

सादगी का वास्तविक अर्थ है अनावश्यक दिखावे और लालच से मुक्त होकर आवश्यकताओं और इच्छाओं के बीच अंतर समझना। महात्मा गांधी ने सादगी को अपने जीवन का हिस्सा बनाया। उनका पहनावा, भोजन और दैनिक जीवन आम भारतीय व्यक्ति के जीवन के बहुत करीब था। उन्होंने यह संदेश दिया कि किसी व्यक्ति की महानता उसके कपड़ों, संपत्ति या पद से नहीं, बल्कि उसके चरित्र और कर्मों से निर्धारित होती है। इसी प्रकार संत फ्रांसिस ऑफ असीसी ने संपन्नता और प्रतिष्ठा का जीवन छोड़कर सादगी, गरीबी और सेवा का मार्ग चुना। उन्होंने अपना जीवन गरीबों, जरूरतमंदों और समाज के उपेक्षित लोगों की सेवा में समर्पित किया। प्रकृति और सभी जीवों के प्रति उनका प्रेम भी उनके जीवन की विशेष पहचान बना।

संत फ्रांसिस का जीवन हमें यह प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करता है क्या हमारे पास जो कुछ है, वह हमारी आवश्यकता है या केवल हमारी इच्छा? सत्य और सादगी का सबसे सुंदर परिणाम सेवा की भावना है। जब मनुष्य अपने अहंकार और स्वार्थ से ऊपर उठता है, तब वह दूसरों के दुख को समझना शुरू करता है। गांधीजी ने समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचने और उसकी पीड़ा को समझने पर जोर दिया। उनके लिए देश की स्वतंत्रता केवल राजनीतिक परिवर्तन नहीं था; वे सामाजिक सुधार, स्वच्छता, आत्मनिर्भरता और कमजोर वर्गों के सम्मान को भी महत्वपूर्ण मानते थे। संत फ्रांसिस ने भी सेवा को अपने जीवन का केंद्र बनाया। उन्होंने गरीबों और बीमारों के बीच जाकर सेवा की और मनुष्य के साथ-साथ प्रकृति तथा जीव-जंतुओं के प्रति करुणा का संदेश दिया।

आज हमारे सामने एक बड़ी चुनौती है- हमारे पास साधन बढ़ रहे हैं, लेकिन संतोष कम होता जा रहा है। हम दूसरों से तुलना करते हैं, सोशल मीडिया पर अपनी उपलब्धियाँ दिखाते हैं और कई बार ऐसी जिंदगी जीने का प्रयास करते हैं जो वास्तव में हमारी अपनी नहीं होती। गांधीजी और संत फ्रांसिस का जीवन हमें इसके विपरीत रास्ता दिखाता है। दोनों हमें याद दिलाते हैं कि जीवन का मूल्य इस बात से नहीं तय होता कि हमारे पास कितना है, बल्कि इस बात से तय होता है कि हम जो कुछ रखते हैं, उसका उपयोग किस उद्देश्य के लिए करते हैं। हमें अपने जीवन में कुछ छोटे-छोटे परिवर्तन करने चाहिए-बात में ईमानदारी, व्यवहार में विनम्रता, आवश्यकताओं में संयम, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और जरूरतमंदों के प्रति सेवा की भावना। सच्चा और सरल जीवन हमेशा आसान नहीं होता। कभी-कभी झूठ बोलना आसान लगता है और दिखावा करना भी सुविधाजनक लगता है। लेकिन सच्चाई के रास्ते पर चलने के लिए साहस चाहिए और सरल जीवन जीने के लिए आत्मअनुशासन। महात्मा गांधी ने सत्य के साथ प्रयोग किया और अपने जीवन को उसी कसौटी पर परखने का प्रयास किया। संत फ्रांसिस ने भी अपने जीवन में सादगी और सेवा को प्राथमिकता दी। उनके जीवन हमें यह समझाते हैं कि परिवर्तन केवल बड़े भाषणों से नहीं, बल्कि व्यक्ति के अपने जीवन से शुरू होता है।

जीवन में सच्चाई और सरलता कोई पुरानी या अप्रासंगिक बातें नहीं हैं। आज के आधुनिक और तेजी से

बदलते समाज में इनकी आवश्यकता शायद और अधिक है। यदि हम गांधीजी से सत्य और आत्मअनुशासन, तथा संत फ्रांसिस से सादगी, करुणा और सेवा सीख सकें, तो हमारा जीवन अधिक शांत, सार्थक और मानवीय बन सकता है। आखिरकार, महान जीवन वह नहीं जिसमें हमारे पास सबसे अधिक वस्तुएँ हों; महान जीवन वह है जिसमें हमारे शब्द सच्चे, व्यवहार सरल, हृदय करुणामय और कर्म दूसरों के लिए उपयोगी हों।

सत्य को जीवन का आधार बनाएँ, सादगी को अपनी पहचान बनाएँ और सेवा को अपने जीवन का उद्देश्य बनाएँ। यही एक बेहतर और अधिक मानवीय समाज की दिशा में हमारा छोटा-सा योगदान हो सकता है।

एलीज़बेथ पैट्रिक, रानीखेत

✦✦✦✦✦✦✦

हिंसा हमारे भीतर ही होती है

हिंसा को हम अक्सर केवल मारपीट, युद्ध, हत्या या किसी पर किए गए शारीरिक अत्याचार से जोड़कर देखते हैं। लेकिन हिंसा का चेहरा हमेशा खून से सना हुआ नहीं होता। कभी-कभी वह हमारे शब्दों में छिपी होती है, कभी हमारे व्यवहार में और कभी हमारी सोच में। किसी को बार-बार अपमानित करना, उसकी भावनाओं को महत्व न देना, किसी की कमजोरी का मजाक उड़ाना या अपनी बात मनवाने के लिए डर पैदा करना भी हिंसा ही है। फर्क सिर्फ इतना है कि ऐसी हिंसा के घाव दिखाई नहीं देते।

हमारे भीतर भी एक छोटी-सी दुनिया है, जहाँ गुस्सा, अहंकार, ईर्ष्या, नफरत और बदले की भावना जन्म लेती है। कोई हमें चोट पहुँचाता है तो मन कहता है- "उसे भी वही दर्द दो।" कोई हमारी बात नहीं मानता तो हम आवाज ऊँची कर देते हैं। किसी की सफलता हमें चुभती है तो हम उसके पीछे बुराई करने लगते हैं। शायद हिंसा की शुरुआत यहीं से होती है- जब हमारे भीतर का दर्द करुणा में बदलने के बजाय किसी दूसरे को चोट पहुँचाने की इच्छा बन जाता है।

कभी-कभी हमारे शब्द किसी के शरीर पर नहीं, उसकी आत्मा पर चोट करते हैं। एक बच्चे से बार-बार कहा गया "तुम किसी काम के नहीं हो", शायद उसके भीतर वर्षों तक गूंजता रहता है। किसी अकेले इंसान को यह कह देना कि "तुम्हारी किसी को जरूरत नहीं", उसके भीतर की आखिरी उम्मीद भी छीन सकता है। हम शब्द बोलकर आगे बढ़ जाते हैं, लेकिन सामने वाला उन्हीं शब्दों को रातों की खामोशी में अपने साथ लेकर बैठा रह सकता है। इसलिए हर शब्द बोलने से पहले यह सोचना जरूरी है कि हमारी आवाज किसी के लिए सहारा बनेगी या घाव।

हम अक्सर चाहते हैं कि दुनिया में शांति हो, लोग एक-दूसरे से प्रेम करें और हिंसा समाप्त हो जाए। लेकिन शांति की शुरुआत हमेशा दुनिया से नहीं होती- वह हमारे अपने भीतर से शुरू होती है। जिस दिन हम गुस्से में भी किसी को अपमानित करने से रुक जाएँगे, जिस दिन हमें बदला लेने का अवसर मिले और हम क्षमा चुनेंगे, जिस दिन हम किसी कमजोर व्यक्ति को दबाने के बजाय उसका हाथ पकड़ेंगे- उस दिन हम सच में अहिंसा की ओर एक कदम बढ़ाएँगे।

शायद हमें हर दिन अपने आप से एक सवाल पूछना चाहिए- "आज मेरे कारण किसी का दिल तो नहीं टूटा?" अगर जवाब हाँ है, तो खुद को सही साबित करने से पहले माफी माँग लेना कमजोरी नहीं, इंसानियत है। क्योंकि किसी को हराने से बड़ी जीत खुद के भीतर उठ रहे क्रोध को हराना है। किसी को चुप कराने से बड़ी ताकत किसी की बात धैर्य से सुनना है और किसी को दर्द देने से बड़ी बहादुरी उसके दर्द को समझना है।

आखिर में, दुनिया को बदलने की शुरुआत किसी बड़े भाषण या आंदोलन से नहीं, बल्कि हमारे छोटे-छोटे व्यवहारों से होगी। जब हम अपने घर में प्रेम से बोलेंगे, अपने बच्चों को डर के बजाय समझ से पालेंगे, किसी अनजान व्यक्ति की मजबूरी पर हँसने के बजाय उसका सम्मान करेंगे और अपने भीतर की नफरत को प्रेम से जवाब देंगे- तभी अहिंसा केवल एक शब्द नहीं, हमारे जीवन का हिस्सा बनेगी। शायद उस दिन हमें समझ आएगा कि दुनिया में शांति खोजने से पहले हमें अपने भीतर शांति पैदा करनी थी।

शिवांगी शर्मा, ईसाईनगर

समाचार दर्शन

बालिका दिवस समारोह

मोतीनगर: 6 सितंबर 2026 को जीवनदान अस्पताल में बालिका दिवस बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न गाँवों और व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों से 150 से अधिक बालिकाओं एवं महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत PIKO के बच्चों द्वारा प्रार्थना नृत्य से हुई। इसके बाद श्रीमती तुलसी प्रधान, श्रीमती एन्सी जॉर्ज, सि. लाविना, मिस गरिमा और सि. अन्नम्मा ने दीप प्रज्वलित किया। अतिथियों का पुष्पों द्वारा स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन सि. सुनीता और श्रीमती विनिता ने किया। विभिन्न गाँवों और प्रशिक्षण केंद्रों की बालिकाओं ने शिक्षा का महत्व, मोबाइल की लत, आत्मविश्वास और परिवार में बालिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका जैसे विषयों पर प्रेरणादायक संदेश प्रस्तुत किए। पंजाबी और पहाड़ी नृत्यों ने कार्यक्रम में विशेष आकर्षण और उत्साह भर दिया। सुश्री कुमकुम, श्रीमती तुलसी प्रधान और सि. लाविना ने अपने प्रेरणादायक भाषणों द्वारा बालिकाओं को अपनी क्षमता पहचानने, अपनी समस्याओं के बारे में परिवार से खुलकर बात करने और समाज में आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। सि. लाविना ने विशेष रूप से व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली बालिकाओं को प्रेरित किया कि वे अपने हुनर का उपयोग करके काम करें, कमाएँ, अपने पैरों पर खड़ी हों और आत्मनिर्भर बनें।

बालिकाओं ने समाज में होने वाली बुराइयों के विरुद्ध खड़े होने और अपने तथा समाज के कल्याण के लिए कार्य करने की शपथ भी ली। व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त सभी लाभार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। कार्यक्रम का समापन श्रीमती अफसाना द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ और सभी के लिए जलपान की व्यवस्था की गई। कार्यक्रम की सफलता में सिस्टर अन्नम्मा और जीवनदान सामाजिक कार्य दल का विशेष योगदान रहा, जिन्होंने बालिकाओं को प्रशिक्षण, अभ्यास और निरंतर प्रोत्साहन देकर कार्यक्रम को सफल बनाया। यह समारोह इस संदेश के साथ सम्पन्न हुआ कि बालिकाओं को शिक्षा, प्रोत्साहन और अवसर देकर हम मजबूत परिवार और बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं।

सि. अन्नाम्मा, MSI मोतीनगर

✦✦✦✦✦✦✦

सशक्त युवा, सशक्त भविष्य

YOUCAT नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम (LTP) 2026

काठगोदाम: ICYM, वेदी सेवक एवं क्रूसवीर आयोग, बरेली धर्मप्रांत द्वारा सुचेतना सामाजिक सेवा केंद्र, काठगोदाम में दो दिवसीय YOUCAT कार्यशाला-सह-नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम (LTP) का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम बरेली के धर्माध्यक्ष इग्नेशियस डिसूजा के पितृवत आशीर्वाद एवं निरंतर मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। कार्यशाला का संचालन YOUCAT India की एक ऊर्जावान एवं अनुभवी टीम- फा. विजय मचादो, निर्देशक YOUCAT India, फा. अनिल वाल्टर एवं सुश्री अपूर्वा ज़ेस द्वारा किया गया। उनके ज्ञानवर्धक सत्रों, संवादात्मक गतिविधियों एवं व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से प्रतिभागियों ने YOUCAT में प्रस्तुत काथलिक विश्वास की सुंदरता को समझा और मसीह के सच्चे साक्षी बनने की प्रेरणा प्राप्त की। इस कार्यक्रम में पूरे धर्मप्रांत से 107 युवा नेताओं ने उत्साह एवं उमंग के साथ भाग लिया। इनमें युवा अनुप्राणदाता, क्रूसवीर एवं वेदी सेवक अनुप्राणदाता तथा पल्ली युवा अध्यक्ष और सचिव शामिल थे। कार्यशाला का विषय "सशक्त युवा, सशक्त भविष्य!" सभी प्रतिभागियों के हृदय में गहराई से उतरा। विभिन्न सत्रों के माध्यम से युवाओं ने एक नेता के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को समझा तथा अपने पल्ली के युवाओं को येसु के और निकट ले जाने के लिए प्रेरणा प्राप्त की।

हम फा. पायस मिनेजस, सुचेतना के निदेशक के प्रति उनकी गर्मजोशीपूर्ण मेजबानी के लिए तथा फा. राजेश, संत तेरेसा विद्यालय के प्रधानाचार्य के प्रति कार्यक्रम के लिए स्थान उपलब्ध कराने एवं सभी आवश्यक सहयोग प्रदान करने हेतु अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। यह LTP वास्तव में एक अद्‌भुत एवं अनुग्रह से परिपूर्ण अनुभव रहा, जिसने हमारे युवाओं को कलीसिया एवं समाज के लिए एक सशक्त भविष्य के निर्माण हेतु नई ऊर्जा, नेतृत्व क्षमता और विश्वास से सुसज्जित किया।

सुश्री अरुणिमा पैट्रिक दास DYS, काठगोदाम

संत मोनिका का पर्व

काठगोदामः संत तेरेसा पल्ली, काठगोदाम में 30 अगस्त 2026 को संत मोनिका का पर्व श्रद्धा, भक्ति और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस विशेष अवसर पर महिलाओं की सक्रिय सहभागिता ने समारोह को विशेष रूप से भावपूर्ण और प्रेरणादायक बना दिया। समारोह के प्रारंभ में सभी महिलाओं का गिरजाघर में प्रज्वलित दीपों के साथ स्वागत किया गया। प्रत्येक महिला ने अपने हाथों में जलता हुआ दीप लेकर उसे वेदी के समक्ष अर्पित किया।

पवित्र मिस्सा बलिदान का अनुष्ठान फा. पायस मिनेजस ने संपन्न किया। उनके साथ फा. एलियास मार्क, फा. राजेश जयशीलन, फा. सुनील कुमार एवं फा. विलियम फ्रांसिस ने सह-अनुष्ठाता के रूप में पवित्र मिस्सा में भाग लिया। इस अवसर पर श्रीमती लूसी प्रताप ने संत मोनिका के जीवन, उनके अटूट विश्वास, धैर्य और प्रार्थनापूर्ण जीवन पर एक सारगर्भित एवं प्रेरणादायक परिचय प्रस्तुत किया। पवित्र मिस्सा के पश्चात समारोह का वातावरण आनंद और सौहार्द से भर गया। सभी महिलाओं ने फा. विलियम फ्रांसिस के साथ मिलकर केक काटा। इसके बाद फा. सुनील ने विभिन्न सामूहिक खेलों का आयोजन किया, जिसमें महिलाओं ने उत्साह और उमंग के साथ भाग लिया। खेलों के विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सभी पल्लीवासियों के लिए जलपान की व्यवस्था की गई। समारोह के अंत में फा. राजेश द्वारा सभी प्रतिभागियों को स्मृति-स्वरूप उपहार प्रदान किए गए। संत मोनिका के पर्व का यह समारोह विश्वास, प्रार्थना, सहभागिता और आपसी प्रेम का सुंदर उत्सव बनकर सामने आया। सभी के सहयोग और उत्साहपूर्ण सहभागिता से कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ और संत मोनिका के विश्वासपूर्ण एवं प्रार्थनापूर्ण जीवन से प्रेरणा लेने का अवसर मिला।

सि. अनूपा, OSF काठगोदाम

✦✦✦✦✦✦✦

माता मरिया जयंती

काठगोदामः संत तेरेसा पल्ली, काठगोदाम में दिनांक 8 सितंबर 2026 को माता मरियम की जयंती का महापर्व हर्षोल्लास, श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस पावन अवसर पर सभी पल्लीवासी जुलूस में माता मरियम को बड़ी भक्ति भाव से लेकर विद्यालय परिसर से होते हुए गिरजाघर पहुँचे। जुलूस के दौरान भक्तिगीत गाते हुए एवं प्रार्थना करते हुए सभी ने माता मरियम के प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति प्रकट की। पल्ली पुरोहित फा. राजेश, फा. सुनील, फा. विलियम एवं अन्य पुरोहितों, धर्मबहनों, पल्लीवासियों की उपस्थिति में पवित्र मिस्सा बलिदान श्रद्धा एवं भक्तिभाव से सम्पन्न हुआ। सभी पल्लीवासियों ने भक्तिपूर्वक मिस्सा में भाग लिया, और माता मरियम की मध्यस्थता से आशीर्वाद एवं कृपा की प्रार्थना की। फा. सुनील ने अपने प्रवचन में बताया कि माता मरियम विश्वास, विनम्रता, आज्ञा कारिता और समर्पण की आदर्श हैं। उनका जीवन हमें ईश्वर की इच्छा पर पूर्ण विश्वास रखना सिखाता है। पवित्र मिस्सा के पश्चात केक कटिंग का कार्यक्रम हुआ। इसके बाद सभी पल्लीवासियों ने मिल-जुलकर प्रेम और भाईचारे के साथ प्रीतिभोज में भाग लिया। इस प्रकार माता मरियम की जयंती का यह पर्व सभी के लिए आनंद, एकता, प्रेम और प्रार्थना का सुंदर अवसर बन गया।

श्रीमती लूसी प्रताप, काठगोदाम

✦✦✦✦✦✦✦

महिला संरक्षिका संत मोनिका पर्व

बरेलीः संत मोनिका के पर्व के अवसर पर संत अल्फोंसस महागिरजाघर की महिलाओं के लिए विशेष प्रार्थना एवं आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर फा. जॉन बॉस्को द्वारा पवित्र मिस्सा बलिदान अर्पित किया गया। मिस्सा के दौरान महिलाओं के लिए विशेष प्रार्थना की गई तथा संत मोनिका के विश्वास, धैर्य और प्रार्थनामय जीवन से प्रेरणा लेने का संदेश दिया गया। पवित्र मिस्सा के पश्चात महिलाओं ने पल्ली पुरोहित फा. जॉन बॉस्को के साथ SRA धर्मबहनों द्वारा संचालित मूक-बधिर विद्यालय का दौरा किया। महिलाओं द्वारा एकत्रित की गई राशन सामग्री विद्यालय के बच्चों के लिए भेंट की गई। इस सेवाकार्य के माध्यम से जरूरतमंद बच्चों के प्रति प्रेम, करुणा और सेवा-भावना का परिचय दिया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत महिलाओं के लिए स्तोत्र 23 कंठस्थ करके बोलने की प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता के अंत में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। यह आयोजन महिलाओं के विश्वास, सेवा और सामुदायिक सहभागिता की भावना को सुदृढ़ करने वाला प्रेरणादायक अवसर रहा।

ईनिड डिक्रूज़, बरेली

पारिवारिक इकाई गठन

काठगोदाम: 6 सितम्बर 2026 को संत तेरेसा काठगोदाम पल्ली में एक ऐतिहासिक शुरुआत के साथ धर्मप्रांतीय पारिवारिक इकाई सेल का गठन का किया गया है। पल्ली से चुने हुए 16 परिवारों को इस पहल से जोड़ा गया। इस पारिवारिक इकाई सेल का मुख्य उद्देश्य पारिवारिक जीवन को मजबूत बनाना, परिवारों में आपसी प्रेम, सहयोग एवं सद्भाव बढ़ाना तथा ईसाई मूल्यों और विश्वास को दैनिक जीवन में जीने के लिए प्रेरित करना है। पारिवारिक इकाई सेल की प्रमुख गतिविधियों (कार्य) में पारिवारिक प्रार्थना, परिवारों से भेंट, बीमार एवं जरूरतमंद परिवारों की सहायता, पारिवारिक प्रेम एवं क्षमा की भावना को बढ़ावा देना आदि शामिल हैं। कार्यक्रम के दौरान प्रतिनिधियों का चयन कर उन्हें विभिन्न जिम्मेदारियाँ सौंपी गई। इसके पश्चात उन्हें प्रशिक्षण दिया जायेगा। संत तेरेसा पल्ली में पारिवारिक इकाई सेल के अंतर्गत 2 समूहों का गठन किया गया पहला निर्मला कान्वेंट के आसपास का क्षेत्र, दूसरा समूह राजपुरा क्षेत्र। दोनों समूहों में सदस्यों का चयन किया गया और सभी को उनके पद दिए गए। इसी के साथ आगामी 27 सितम्बर 2026 को उन दंपतियों के लिए जो 10-15 वर्षों से विवाहित हैं। एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा, जिसमें बेहतर माता-पिता होने के विषय पर आधारित संगोष्ठी होगी। कार्यक्रम के अंत में सबने फा. जॉनी और फा. राजेश का धन्यवाद किया।

श्रीमती लूसी प्रताप, काठगोदाम

✦✦✦✦✦✦✦

महिला दिवस

रुद्रपुर: संत अन्ना पल्ली में, संत मोनिका के पर्व के अवसर पर महिला दिवस बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ पवित्र यूखरिस्त की आराधना से हुआ, जिसमें सभी ने प्रार्थना और आराधना के माध्यम से ईश्वर को धन्यवाद दिया। इसके पश्चात् पवित्र मिस्सा बलिदान अर्पित किया गया। अपने संदेश में आदरणीय फा. डोमिनिक ने, सेवा में विनम्रता के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने धन्य कुँवारी मरियम के जीवन का उदाहरण देते हुए बताया कि सच्ची सेवा विनम्रता, प्रेम और समर्पण से परिपूर्ण होती है। उन्होंने सुसमाचार में महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान और उनकी विशेष भूमिका को भी स्मरण किया। इस अवसर पर सभी महिलाओं के लिए विशेष प्रार्थनाएँ भी अर्पित की गईं।

धार्मिक कार्यक्रम के पश्चात् संत मेरीज विद्यालय के सभागार में एक संक्षिप्त सांस्कृतिक एवं मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न मनोरंजक खेलों और नृत्यों ने सभी उपस्थित लोगों को आनंदित किया। कार्यक्रम का आयोजन पुरुष संघ द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्रद्धेय फा. डोमिनिक, सि. सगाय, सि. ब्लेसी तथा पल्ली परिषद के सदस्य उपस्थित रहे। महिलाओं के सम्मान, उनके योगदान और उनकी सेवा भावना को समर्पित यह आयोजन प्रेम, आनंद और भाईचारे के वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का समापन सभी के लिए आयोजित सामूहिक दोपहर भोज के साथ हुआ।

✦✦✦✦✦✦✦

तैराकी में स्वर्णिम सफलता

"सपनों को पाने की राह में मेहनत अनुशासन और लगन ही सफलता की सच्ची कुंजी है।" इसी भावना को चरितार्थ करते हुए संत एलोसियस कॉलेज पीलीभीत के कक्षा आठ के प्रतिभाशाली छात्र फुआद मोहम्मद खान ने तैराकी प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया। उनके शानदार प्रदर्शन के आधार पर उनका चयन सी.बी.एस.ई. की राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता के लिए हुआ है। फुआद ने सी.बी.एस.ई. ईस्ट जोन तैराकी चैम्पियनशिप 2026 में 50 मी. बटरफ्लाई में स्वर्ण पदक, 100 मी. बटरफ्लाई में स्वर्ण पदक तथा 200 मी. बटरफ्लाई में रजत पदक प्राप्त किया। यह प्रतियोगिता श्री चैतन्य टेक्नो स्कूल, फिरोजबाद द्वारा आयोजित की गई थी। फुआद की इस उपलब्धि ने विद्यालय के गौरव का एक और अध्याय जोड़ा है। उनकी मेहनत, अनुशासन और खेल के प्रति समर्पण अन्य विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत है। विद्यालय के प्रधानाचार्य फा. शाजी क्रिस्टोफर ने फुआद को उनकी शानदार उपलब्धि तथा राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए चयनित होने पर हार्दिक बधाई दी और आगामी प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएँ दीं। विद्यालय परिवार को विश्वास है कि फुआद राष्ट्रीय स्तर पर भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय का गौरव बढ़ाएंगे।

डा. दीपिका शर्मा, पीलीभीत

महिला संरक्षिका पर्व

बाज़पुर: 27 अगस्त को बाजपुर पल्ली की संरक्षक संत मोनिका का पर्व पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। बाजपुर पल्ली के लिए यह ईश्वर के प्रति अत्यंत प्रसन्नता का अवसर था। क्योंकि पल्ली की सभी महिलाओं ने यह पर्व बड़े ही प्रसन्नता तथा उदारपूर्वक से मनाया। साथ ही साथ महिलाओं द्वारा पाप स्वीकार भी किया गया। यह ईश्वर के प्रति उनका प्रेम दर्शाता है। हमारे पल्ली पुरोहित ने संत मोनिका के सामान बाइबिल को पढ़ने तथा निरंतर प्रार्थना करने की प्रेरणा दी। मिस्सा बलिदान के बाद सभी को धन्यवाद दिया। संत मोनिका हमारे लिये विशेषकर महिलाओं के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है। क्योंकि वह एक विनम्र और धार्मिक स्त्री थी।

प्रियंका दास, बाजपुर

✦✦✦✦✦✦✦

किशोरी एवं बाल सम्मेलन

दाह फार्म: 20 सितम्बर 2026 को दाह फार्म के संत फ्रांसिस विद्यालय में अजीम प्रेमजी फाउंडेशन की उड़ान परियोजना के अंतर्गत किशोरियों एवं बच्चों के लिए एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य किशोरियों को केवल कार्यक्रमों में भाग लेने तक सीमित न रखकर उन्हें अपने अधिकारों, जिम्मेदारियों, निर्णय लेने की क्षमता और अपने भविष्य के प्रति जागरूक एवं आत्मविश्वासी बनाने की दिशा में प्रेरित करना था। 15 गाँवों से लगभग 350 किशोरियों एवं बच्चों की उत्साहपूर्ण भागीदारी ने इस सम्मेलन को विशेष बना दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ, जिसने इस भावना को व्यक्त किया कि एक जागरूक किशोरी स्वयं के साथ-साथ अपने परिवार, समाज और आने वाली पीढ़ी के लिए भी प्रकाश की किरण बन सकती है। इस सम्मेलन ने किशोरियों को यह संदेश दिया कि उनकी आवाज महत्वपूर्ण है, उनके सपने महत्वपूर्ण हैं और उनके भविष्य के निर्णयों में उनकी भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। किशोरी को केवल किसी की बेटी, बहन या बहू के रूप में मात्र नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्तित्व, सीखने वाली, निर्णय लेने वाली और समाज में योगदान देने वाली नागरिक के रूप में देखने की आवश्यकता है।

दीनदयाल, दाह फार्म

✦✦✦✦✦✦✦

माता मरियम का जन्म दिवस

ज्योलीकोट: 8 सितंबर को संत एंथोनी पल्ली में नौ दिवसीय नोवेना के बाद माता मरियम का जन्म दिवस धूमधाम के साथ मनाया गया। गिरजाघर प्रांगण में माता मरियम को बालिका रूप में प्रस्तुत कर उनके चारों ओर खड़े होकर फूलों से व गीतों के द्वारा उनका स्वागत किया गया। इसके साथ ही बालिका दिवस भी मनाया गया। बालिकाओं को समान अधिकार, सम्मान, शिक्षा, उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त हो सके, यही मुख्य उद्देश्य के साथ समस्त बालिकाओं को माता मरियम के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। बालिकाओं के लिए विशेष प्रार्थना की गई एवं जो बालिकायें भ्रूणहत्या व उनके परिवारों द्वारा भेदभाव के कारण ग्रहण नहीं की जाती हैं, ईश्वर से व माता मरियम के मध्यस्थता में उन सभी के लिए प्रार्थना की गई। पल्ली पुरोहित फा. डेरिक के द्वारा सभी को माता मरियम के समान निष्कलंक, निस्वार्थ भाव से सेवा करने की प्रेरणा दी गई। मिस्सा के उपरांत सभी बालिकाओं को केक व लघु जलपान के साथ बधाई दी गई।

सरिता जेम्स, ज्योलीकोट

✦✦✦✦✦✦✦

संत मोनिका पर्व

बैलपड़ाव: 27 अगस्त 2026 को संत पीटर पल्ली की समस्त महिलाओं ने संत मोनिका का पर्व बड़े हर्ष और उल्लास से साथ मनाया। संत मोनिका संघ की सभी महिलाओं ने गिरजाघर के द्वार पर दो पंक्तियों में जुलूस के साथ गिरजाघर प्रांगण से प्रभु के भवन में प्रवेश किया और संत मोनिका की प्रतिमा के समक्ष पुष्प अर्पण किया। सभी महिलाओं ने अराधना व पूजनविधि को संचालित करने में अपना सहयोग दिया। पल्ली पुरोहित फा. हेनरी मेन्डोन्सा ने सभी माताओं को संत मोनिका के समान अपने परिवार को ईश्वर के लिए समर्पित करने का संदेश दिया। जिस प्रकार संत मोनिका के आँसू व्यर्थ नहीं गए और उन्होंने अपनी प्रार्थना व विश्वास के द्वारा अपने पुत्र को शैतान के जाल में फंसने से बचाया उसी प्रकार माताएँ अपने परिवार के लिए एक आदर्श माँ बनकर अपने परिवार का सही मार्गदर्शन करने का प्रयास करें। मिस्सा बलिदान के पश्चात् इस पावन पर्व के उपलक्ष में सभी महिलाओं ने मिलकर केक काटा और अंत में जलपान व लघु पुरस्कार वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

निर्मला जोसफ, बैलपड़ाव

बाइबिल प्रश्नोत्तरी - 132

पहला इतिहास ग्रन्थ (अध्याय 1-9)

अध्याय एवं पद संख्या का उल्लेख करें। कृपया अपने उत्तर 24 अक्टूबर 2026 तक भेज दें।

1. शेशान के मिस्री सेवक का क्या नाम था ?
2. ------- वंश के कुछ कुलों को एफ़्रईम वंश से नगर मिले।
3. किसका पुत्र ज़कार्या दर्शन कक्षा के द्वार का द्वारपाल था ?
4. कौन छालटी कपड़े बुनने वालों का मूल पुरुष था ?
5. मरारी किसका पुत्र था ?
6. अबोर के पुत्र की राजधानी का क्या नाम था ?
7. पूर्ण कीजिए: यहोयाकीम के वंशज -------
8. बेनयामीन के कितने पुत्र थे ?
9. मोसा --------- का पिता था ।
10. "यूदा अपने भाइयों से अधिक शक्तिशाली निकला।" सही या गलत ?
11. यईएल कहा रहता था ?
12. नहम की बहन किसकी पत्नी थी ?

Prepared by: Miss Shweta D Cruze

सूचनाः कृपया अपने उत्तर इस इमेल पते पर भेजें: chetnabareilly1989@gmail.com अथवा इस नम्बर के वाट्सएप पर भेजें: 8533886703 उत्तर के साथ अपना और अपनी पल्ली का नाम अवश्य लिखें।

✦✦✦✦✦✦✦✦

MY FAITH (CATECHISM QUIZ) - 132

CATECHISM OF THE CATHOLIC CHURCH: ARTICLES (2598-2615)

Please send your answers latest by 24 October 2026. Kindly send your answers only:

1. Whose words and works are the visible manifestation of his prayer in secret?
2. The _________ who became Son of Virgin also learnt to pray according to the human heart.
3. What is a filial adherence to God?
4. ________ is a communion of love with the Father.
5. "Four principle parables on prayer are transmitted to us by St Luke." True or false?
6. What gives the key to prayer in Christ?
7. Complete the following: All things_____.
8. Who is more precious than the gift?
9. Which gospel emphasizes the action of the Holy Spirit?
10. "The evangelists have preserved two More explicit prayers offered by Christ during his public ministry" True or false?
11. When _______ prays he is already teaching us how to pray.
12. What bears its fruit in love?

Prepared by: Miss Shweta D Cruze

बाइबिल प्रश्नोत्तरी - 131 के उत्तर

1. कूश (19:9)
2. उसका पुत्र योआश (13:9)
3. यूदा के राजा उज्जीया के उनतालीसवें वर्ष (15:13)
4. नबियों और दृष्टाओं (17:13)
5. इसायाह (20:9)
6. सही (25:21)
7. अशेरा (23:6)
8. यहूदी (18:28)
9. सही (14:11)
10. आहाज (16:17)
11. उसका पुत्र आमोन (21:18)
12. इक्कीस वर्ष (24:18)

मेरा विश्वास (धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी) - 131 के उत्तर

1. Psalms CCC 2589
2. Elijah CCC 2582
3. The Psalter CCC 2587
4. The infant Samuel CCC 2578
5. Prophets CCC 2584
6. The sacrifice on Mount Carmel CCC 2583
7. David CCC 2579
8. Moses CCC 2593
9. Psalms CCC 2596
10. Five books CCC 2585
11. The prayer at the dedication of the temple CCC 2580
12. Psalms CCC 2586

बाइबिल प्रश्नोत्तरी - 131 के विजेता

प्रथम पुरस्कार - सुशांति, खटीमा

द्वितीय पुरस्कार - चंदन, बाजपुर

तृतीय पुरस्कार - एकता, रुद्रपुर

My Faith (धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी) - 131 के विजेता

प्रथम पुरस्कार - सुदीप, पिथौरागढ़

द्वितीय पुरस्कार - सि. लिट्टी, मीरगंज

तृतीय पुरस्कार - अभिषेक, करेली

BIRTHDAYS

1	Rev. Fr. Vivian Rovel Fernandes	01 October
2	Rev. Fr. Firoz Nayak	04 October
3	Rev. Fr. Chinnappan M.	08 October
4	Rev. Fr. Nicholas Runda	13 October
5	Rev. Fr. Charles P.	27 October
6	Rev. Fr. Harold D'Cunha	28 October

NECROLOGY

1	Rev. Fr. J. B. Macarenhas	03 October
2	Rev. Fr. Walter Saldanha	04 October